सुरभिः

कक्षा – 7

सत्र 2019–20

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढे एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

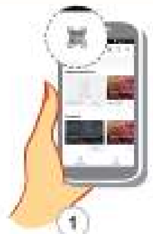

1 पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

2 मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

3 सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

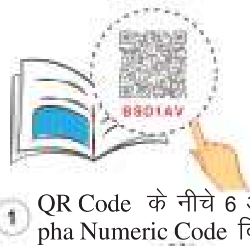

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

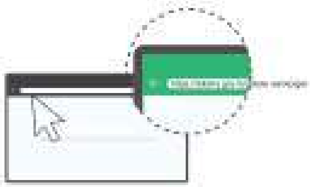

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

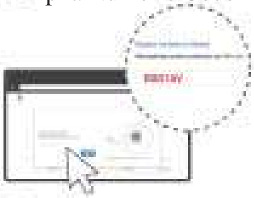

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

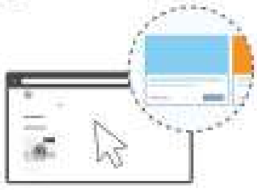

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष – 2019

राज्य—शैक्षिक—अनुसंधान और प्रशिक्षण—परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

—: मार्गदर्शन :—

Q7L1PK

1. डॉ. रमाकान्त अग्निहोत्री, प्राध्यापक
   भाषा विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली
2. डॉ. मनीषा पाठक, सेवा निवृत्त प्राचार्या
3. डॉ. तोयनिधि वैष्णव, प्राध्यापक शा.दू.श्री वैष्णव
   स्नातकोत्तर संस्कृत महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

—: संयोजक :—

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

—: विषय समन्वयक एवं सम्पादक :—

श्री बी.पी. तिवारी, सहायक प्राध्यापक, एस.सी.ई.आर.टी.,रायपुर

—: लेखक समूह :—

श्री बी.पी. तिवारी, श्री आर.पी. मिश्रा, श्रीमती श्वेता शर्मा, श्री रमेश कुमार पाण्डेय

—: चित्रांकन :—

राजेन्द्र सिंह ठाकुर, रेखराज चौरागड़े, समीर श्रीवास्तव

—: पृष्ठसज्जा :—

रेखराज चौरागड़े

—: आवरण पृष्ठ :—

श्रीमती मंजुषा बेडेकर

—: सहयोग :—

आसिफ, भिलाई

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

प्राक्कथन

शिक्षण में पाठ्यपुस्तकों की उपादेयता महत्वपूर्ण सहायक उपकरण के रूप में होती है। इसके माध्यम से छात्रों के व्यवहार में वाञ्छित परिवर्तन हेतु प्रयास किया जाता है, जिससे उन्हें नए ज्ञान एवं अनुभवों की सम्प्राप्ति सुगमतापूर्वक हो जाती है। संस्कृत विषय की नवीन पाठ्यपुस्तकों का सृजन छत्तीसगढ़ राज्य की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं के अनुरूप किया गया है।

हमारी शिक्षा में संस्कृत का विशेष महत्व है। भारतीय संस्कृति के संरक्षण तथा हिन्दी भाषा और साहित्य के सम्यक ज्ञान के लिए सम्प्रति संस्कृत का ज्ञान परमावश्यक है। कक्षा सातवी में पठन–पाठन की व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए यह पाठ्यपुस्तक नवीन पाठ्यक्रम पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुरूप विद्यालयों के प्रत्येक स्तर पर न्यूनतम अधिगम–स्तर की प्राप्ति पर बल दिया गया है। पाठ्य–सामग्री का चयन छात्रों की मानसिक क्षमता व रुचि को ध्यान में रखकर किया गया है। संस्कृत–शिक्षण को अधिक सरल, सुबोध एवं व्यवहारपरक बनाने की दृष्टि से पाठ्य सामग्री का चयन सामान्य जनजीवन में क्रियाकलापों के आधार पर किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विशेष बल दिया गया है –

1. पाठों की सरल भाषा व प्रस्तुतीकरण की रोचक विधि।
2. भाषाई कौशलों का विकास।
3. संवाद वाक्य एवं उसकी शब्दावली अगली कक्षाओं में छात्रों की समझ को पुष्ट बनाएगी।
4. पाठ्यपुस्तक छात्रों में अपने राष्ट्र एवं संस्कृति के प्रति समादर एवं भावनात्मक एकता उत्पन्न करने पर पुनर्बलन देगी।
5. आधुनिक वैज्ञानिक अविष्कार सङ्गणक (कम्प्यूटर), पर्यावरणगीत, छत्तीसगढ़ के पर्व, पौराणिक कथा, छत्तीसगढ़ की लोकभाषा, छत्तीसगढ़ के धार्मिक स्थल, गीताऽमृत, चाणक्य के वचन, ईदमहोत्सव, राष्ट्रीय पर्व, महापुरूषों की जीवनी, नीतिश्लोक, सूक्तियाँ आदि का समावेश इसमें प्रासंगिकता व नवीनता लाएगी।
6. प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के प्रश्न दिए गए हैं। इस बात का ध्यान रखा गया है कि भावबोध एवं क्रियात्मक अभ्यास के प्रश्नों द्वारा पाठ में निहित मर्म, (अवधारणाएँ) भाषा–शैली

एवं शिक्षण–विधियों के विविध पक्ष ग्राह्य एवं अभिव्यक्ति क्षमता दे सकें। फलस्वरूप वे अपनी वर्तनी, उच्चारण, शब्द एवं वाक्य रचना संबंधी क्षमताओं एवं प्रवीणताओं में निखार ला सकें।

7. पाठ्यपुस्तक में छात्र–क्रियाकलाप (गतिविधियों) पर विशेष ध्यान (बल) दिया गया है।

8. पाठ्य सामग्री को रोचक बनाने हेतु आवश्यक चित्रों का भी यथास्थान समावेश किया गया है।

बच्चों के मन में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति क्षमता विकसित करने में शिक्षण विधा की महती भूमिका होती है। अतः कक्षाशिक्षण के समय पाठ्य सामग्री का रचनात्मक उपयोग परमावश्यक है। पाठ्यपुस्तक विकास की सहभागिता आधारित प्रक्रिया के अन्तर्गत विषय विशेषज्ञों के गहन विचारविमर्श के उपरान्त पाठ्यपुस्तक का विकास किया गया है। संस्कृत पाठ्यपुस्तक के उन सभी विशेषज्ञों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। जिनके ज्ञान, अनुभव और सतत् परिश्रम से इस पुस्तक को आकार मिला है।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

पाठ्यक्रम

पाठ्य विषय

(1) संस्कृत पाठ्यवस्तु को रोचक एवं आनन्ददायी बनाने के लिए गद्य, पद्य, कथा तथा संवाद पाठ को समामेलित किया गया है।

(2) कक्षा 7 संस्कृत में अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए प्रयाणगीत, छत्तीसगढ़ के पर्व, कम्प्यूटर (संगणक) रायपुर नगर चाणक्य के वचन, ईदमहोत्सवः, गीताऽमृतम्, भोरमदेव, आदर्शछात्र, छत्तीसगढ़ की लोकभाषाएँ, संस्कृत में पत्र लेखन संस्कृत भाषा का महत्त्व, वसन्त वर्णन, पौराणिक कथा, पर्यावरण, नीति श्लोक, महापुरूषों की जीवनी, होलिकोत्सव व संस्कृत सूक्तियों को समावेशित किया गया है।

कौशलपरक दक्षताएँ –

1 श्रवण –

(1) संस्कृत के सरल गद्यांशों एवं पद्यों को सुनकर अर्थ समझ सकेगा।

(2) कक्षागत विषयवस्तु को ध्यानपूर्वक सुनकर तद्नुरूप क्रिया कर सकेगा।

(3) संस्कृत के गद्य व पद्य खण्डों को सुनकर उनका भाव ग्रहण कर सकेगा।

2. भाषण –

(1) संस्कृत में सरल प्रश्नोत्तर कर सकेगा।

(2) संस्कृत पाठ्यपुस्तक के अन्तर्गत लघु पठित संस्कृत–कथाएँ सुना सकेगा।

3. वाचन –

(1) संस्कृत गद्य व पद्य का शुद्ध वाचन कर सकेगा।

(2) संस्कृत पद्यों का उचित लय के साथ पाठ कर सकेगा।

4. लेखन –

(1) संस्कृत में पूछे गये प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में लिख सकेगा।

(2) चित्रों के आधार पर संस्कृत में वाक्य बना सकेगा।

(3) कथानक या घटना के आधार पर दिये गये वाक्यों को क्रम से लिख सकेगा।

5. चिंतन –

पाठ्यवस्तु को पढ़कर अथवा सुनकर छात्र उसमें विद्यमान गुणों के विषय में अपना मत रख सकेगा।

6. भाषिकतत्व–क्षमता –

(1) पठित विषय पर सरल संस्कृत में पाँच वाक्य लिख सकेगा।

(2) विशेष्य के अनुसार विशेषण का वचन परिवर्तन कर सकेगा।

7. अभिरुचि –

दी गई संस्कृत सूक्तियों एवं सुभाषितों को कण्ठस्थ कर सुना सकेगा।

संस्कृत व्याकरण

संज्ञा –

(1) ऋकारान्त पुल्लिङ्ग – पितृ, कर्तृ

(2) इकारान्त स्त्रीलिङ्ग – मति, गति

(3) इकारान्त पुल्लिङ्ग – रवि, पति, हरि, गिरि, अग्नि, अतिथि, मुनि, कपि, नृपति, विधि, व्याधि, उदधि, वारिधि आदि ।

(4) ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग – जननी, वाणी, गौरी, नारी, भवती, सखी, पत्नी, राज्ञी, नगरी, सहचरी, विदुषी, स्त्री आदि।

(5) उकारान्त पुल्लिङ्ग – भानु, साधु, गुरु, विष्णु, प्रभु, शिशु, विधु, पशु, शम्भु (बाँस), भृगु, रिपु, उरु, जन्तु, मृत्यु, ऋतु, हेतु, तरु आदि।

(6) उकारान्त नपुंसकलिङ्ग – मधु, दारु, जानु, तालु, वस्तु आदि।

(7) इकारान्त नपुंसकलिङ्ग – वारि, सुरभि शुचि। अक्षि (आँख), अस्थि (हड्डी), सक्थि (जाँघ) और दधि (दही) शब्द के रूप कुछ भिन्न चलेंगे।

सर्वनाम – एतद् , यद्।

विशेषण – संख्यावाची – (11 से 50 तक)

एकादशः से विंशति तक संख्याओं का प्रयोग।

कारक – कारकों का सामान्य प्रयोग।

क्रिया – क्रिया का परस्मैपद एवं आत्मनेपद में प्रयोग।

धातु – चर्, वस्, रक्ष्, नृत्, कथ्, हृ।

नी (नय्) दा (यच्छ) कुप्, पा (पिब्), वद्।

विधिलिङ् लकार – लोट् एवं विधिलिङ् लकार का परस्मैपद एवं आत्मनेपद में प्रयोग।

सन्धि – स्वर, व्यञ्जन एवं विसर्ग सन्धि। स्वर सन्धि में दीर्घ स्वर सन्धि, गुण स्वर सन्धि, वृद्धि स्वर सन्धि, यण् स्वर सन्धि एवं अयादि स्वर सन्धि।

समास – समास का सामान्य परिचय – तत्पुरुष, द्विगु, द्वन्द्व, कर्मधारय, बहुब्रीहि तथा अव्ययीभाव समास।

उपसर्ग – अनु, अव, आ, उप, प्र, प्रति, सम्।

अव्यय – अधुना, अद्य, ह्यः, श्वः, अधः, पश्चात्, उपरि, ततः, कुतः, सर्वतः यदा, कदा, कथम्,तत्र, सर्वत्र, पुरतः पुरः पुरस्तात्, यदा, कदा, तदा, अतः, अपि, कुत्र, यत्र, च, वा, एव, अथ, अथकिम्, अलम्, इह, क्व, खलु, तत्, तदानीम्, तर्हि तावत् न, ध्रुवम् नहि, नूनम्,परम्,परितः, पुनः, पुरा, पृथक्, दिवा, विष्ट्या, प्रतिदिनम्, प्रत्युत्, प्राक्, प्रातः, सत्वरम् बहिः, वृथा, मा, उच्चैः, धिक् इतस्ततः, यथा, तथा, प्रायः, स्वस्ति, वै, विना, यत्, सद्यः, समम्, सम्प्रति, सर्वतः, सर्वदा, साक्षात्, सायम् हि।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पाठ		पृष्ठ क्रमांक
	वन्दना		1
1.	प्रयाणगीतम्	गीतम् पाठः	2
2.	छत्तीसगढस्य पर्वाणि	गद्यम् पाठः	4
3.	सङ्गणकः	संवादः पाठः	7
4.	रायपुरनगरम्	गद्यम् पाठः	9
5.	चाणक्यवचनानि	पद्यम् पाठः	11
6.	ईदमहोत्सवः	संवादः पाठः	13
7.	गीताऽमृतम्	पद्यम् पाठः	15
8.	भोरमदेवः	गद्यम् पाठः	17
9.	आदर्शछात्रः	संवादः पाठः	19
10.	छत्तीसगढस्य–लोकभाषा	गद्यम् पाठः	21
11.	पितरं प्रति पत्रम्	गद्यम् पाठः	24
12.	संस्कृत भाषायाः महत्त्वम्	गद्यम् पाठः	25
13.	सत्सङ्गतिः	गद्यम् पाठः	27
14.	श्रवणकुमारस्य कथा	पौराणिककथा	29
15.	पर्यावरणम्	पर्यावरणम् पाठः	31
16.	नीतिनवनीतानि	पद्यम् पाठः	33
17.	महात्मागाँधी	गद्यम् पाठः	35
18.	होलिकोत्सवः	गद्यम् पाठः	37
19.	सूक्तयः		39
20.	परिशिष्टव्याकरणम्		41

PRTALL

वन्दना

1. सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता।
मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत् ।।

2. ओङ्कारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओङ्काराय नमो नमः ।।

3. वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूर–मर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद् गुरुम्।।

4. गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

हिन्दी अर्थ

अर्थ– 1. सभी तीर्थों की तरह माता, सभी देवों की तरह पिता है। अतः माता तथा पिता की पूजा आत्मभाव से करनी चाहिए।

2. ओंकार शब्द बिन्दु युक्त है, जिसका योगी लोग सदा ही ध्यान करते हैं। ऐसी कामनाओं और मोक्ष प्रदान करने वाले ओंकार (ॐ) स्वरूप ईश्वर को बार–बार प्रणाम करता हूँ।

3. कंस और चाणूर पहलवान को मारने वाले, माता देवकी को परमानन्द देने वाले, वसुदेव के पुत्र श्रीकृष्ण भगवान् को प्रणाम करता हूँ।

4. गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है, गुरु ही महादेव (शिव) है, गुरु साक्षात् परब्रह्म है ऐसे उस गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

PS15P6

प्रथमः पाठः

प्रयाणगीतम्

चन्दनतुल्या भारतभूमिस्तपस्थली ग्रामो ग्रामः।
बाला–बाला देवी प्रतिमा वत्सो वत्सः श्रीरामः।
मन्दिरवत् पावनं शरीरं
सर्वो मानव उपकारी।
सिंहा इह खेलनका जाता
गौरिह पूज्या जनयित्री।।
इह प्रभाते शङ्खध्वनिः सायं सङ्गीतस्वान्।
बाला–बाला देवी प्रतिमा वत्सो वत्सः श्रीरामः।। (1)
अत्र कर्मतो भाग्यनिर्मितिः
पौरुषनिष्ठा कल्याणी।
अत्र त्यागतपस्या मिश्रा
गाथा गायति कविवाणी।।
अत्र ज्ञानप्रवाहो गङ्गासलिलनिर्मलो ह्यविरामः।
बाला बाला देवीप्रतिमा वत्सो वत्सः श्रीरामः।। (2)
अत्रत्यैः सैनिकैः समरभुवि
सदा गीयते श्रीगीता।
अत्र क्षेत्रे हलफालाधः
खेलति सुकुमारी सीता।।
अत्र जीवनादर्शे जटितो मङ्गलमयमणिरभिरामः।
बाला बाला देवी प्रतिमा वत्सो वत्सः श्रीरामः।। (3)

शब्दार्थाः

चन्दनतुल्या = चन्दन के समान। प्रतिमा = मूर्ति। वत्सो–वत्सः = बच्चा–बच्चा। मन्दिरवत् = मन्दिर के समान। सिंहा = सिंह। इह = यहां। खेलनकाः = खिलौने। जनयित्री = माता। इह प्रभाते = इस सुबह में। स्वान् = शब्द। कर्मतो = कर्म से। भाग्यनिर्मितः = भाग्य से बना। अत्र = यहाँ। गायति = गाती है। अत्र ज्ञानप्रवाहो = यहाँ ज्ञान की धारा। गङ्गासलिलनिर्मलो = पवित्र गंगा का जल। अत्रत्यैः सैनिकैः = यहाँ सैनिकों द्वारा। सदागीयते = हमेशा गाई जाती है। अत्रक्षेत्रे = यहाँ क्षेत्र में। हलफालाधः = हल के फल के नीचे। खेलति = खेलती है। सुकुमारी सीता= कोमलांगी सीता। जीवनादर्शे = जीवन आदर्श में। मङ्गलमयमणिरभिरामः = मंगल (सुख) मणि की तरह सुन्दर।

अभ्यासः

प्रश्न 1. निम्नलिखित का संस्कृत में उत्तर दीजिए –

(क) अस्माकं भारतभूमिः कीदृशी अस्ति ?

(ख) अत्र भारते गौः किं मन्यते ?

(ग) अत्रत्यैः सैनिकैः समरभुवि किं गीयते ?

(घ) अत्र जीवनादर्शे किं जटितम् ?

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(क) सिंहा इह .... सन्ति।

(ख) अत्र कर्मतः .... भवति।

(ग) अत्र क्षेत्रे सुकुमारी सीता ....।

(घ) अत्र .... मङ्गलमयमणिः जटितः।

प्रश्न 3. निम्नलिखित का संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) भारत भूमि का बच्चा–बच्चा श्रीराम है।

(ख) यहाँ प्रभात में शंखध्वनि होती है।

(ग) यहाँ कविवाणी त्याग तपस्यामय गाथाएं गाती है।

(घ) इस क्षेत्र में सुकुमारी सीता खेला करती हैं।

प्रश्न 4. (क) निम्न पदों की सन्धि कीजिए –

(1) मानव + उपकारी। (2) कर्मतः + भाग्यनिर्मितिः।

(ख) सन्धि विच्छेद कीजिए–

(1) ह्यविरामः। (2) मणिरभिरामः।

प्रश्न 5. निम्नलिखित का उत्तर दीजिए –

(क) 'जनयित्री' शब्द का पुल्लिङ्ग बताइये।

(ख) 'गाथा' शब्द की द्वितीया विभक्ति तथा वचन बताइये।

(ग) 'सैनिकैः' पद में शब्द तथा वचन बताइये।

विशेष – इस रचना को कण्ठस्थ करके लयसहित सुनाइये।

PS36N9

❖❖❖

द्वितीयः पाठः
''छत्तीसगढस्य प्रमुखपर्वाणि''

मानवजीवने उत्सवानां महत्वं सर्वविदितमेव। छत्तीसगढ़राज्ये बहवः उत्सवाः प्रचलिताः। तेषु ''हरेली'', ''पोरा'', ''तीजा'', ''जवारा'', ''जेठौनी'', ''छेरछेरा पुन्नी'', इत्यादयः मुख्याः सन्ति। एतेषु –

1. ''हरेली'' – इत्यस्य विशिष्टं महत्वमस्ति। श्रावणमासस्य अमावस्यायां ''हरेली'' उत्सवः भवति।वातावरणे सर्वत्र हरीतिमा लक्ष्यते। कृषकाः क्षेत्रेषु बीजवपनं कृत्वा सर्वाणि उपकरणानि संशोध्य पशूनां पूजनं कुर्वन्ति। पशूनां कृते गोधूमनिर्मितां रोटिकां पाचयन्ति। तण्डुलनिर्मिता चित्रापूपः (चीला) इति खाद्यपदार्थस्य सेवनं कुर्वन्ति जनाः। बालकाः काष्ठनिर्मितेन ''गेड़ी'' नामक्रीडोपकरणेन इतस्ततः विचरन्ति हर्षं च अनुभवन्ति।

2. ''पोरा'' – भाद्रपदस्य अमावस्यायां पोरा (पोला) उत्सवः भवति। कृषि प्रधानस्य छत्तीसगढस्य अयं प्रधानः उत्सवः। कृषि कार्यं क्षेत्रकर्षणं च बलीवर्दाः कुर्वन्ति। अतः अस्मिन् उत्सवे बलीवर्दानां विशिष्टा सज्जा भवति। प्रतीकरुपेण बालकाः अपि मृण्मय (मिट्टीका) वृषभैः (नादिया बैल) क्रीडन्ति। बालिकाः ''फुगड़ी'' आदि क्रीडया स्वकीयमानन्दं प्रदर्शयन्ति। तीजापर्वणः अत्र विशेषं महत्वमस्ति। स्त्रियः स्वीयं मातृकुलं गत्वा परिवारजनैः सह सानन्दमुपोष्य पत्युः दीर्घायुष्यं कामयन्ति। व्रतस्य समापने नानाविधं व्यञ्जनं पचन्ति। ''ठेठरी'', ''खुरमी'' इति खाद्यपदार्थं परस्परं वितरन्ति। नानाविधानि वस्त्राभूषणानि परिधाय भगवतः पूजनं कृत्वा संतोषमनुभवन्ति

ति।

3. ''जवारा'' – आश्विनमासस्य शुक्लपक्षे नवम्यां तिथौ देव्याः दुर्गायाः विसर्जनोत्सवः ''जवारा'' इत्युच्यते। अङ्कुरितान् यवान् आदाय समारोहपूर्वकं गीतवाद्यादिभिः देव्याः पूजनं कृत्वा तेषां विसर्जनं क्रियते। हरितवर्णाः यवाङ्कुराः समृद्धेः प्रतीकभूताः सन्ति।

4. ''जेठौनी''– देवप्रबोधनी एकादशी ''जेठौनी'' इति उच्यते। अस्मिन् पर्वणि सायङ्काले तुलसी विवाहः श्री विष्णुना सह समायोज्यते। गोपालकाः स्वकीय पशून् मयूरपिच्छादिना भूषयन्ति। कार्तिकपूर्णिमापर्यन्तम् उत्सवोऽयं प्रचलति।

5. ''छेरछेरा पुन्नी'' – चातुर्मासस्य समाप्त्यनन्तरं पौषपूर्णिमायां सञ्चितधान्यं भाण्डारगृहात् आदाय आपणे विक्रयार्थं नीयते। अस्मिन् पर्वणि बालकाः प्रतिगृहं गत्वा ''छेरछेरा–छेरछेरा–कोठी के धान ल हेर–हेरा'' ''जबे देबे तबे टरब'' इति लोकभाषायां कथयन्तः नवान्नानि याचन्ते। ग्राम्यबालिकाः मध्ये शुकं स्थापयित्वा अभितः नृत्यन्ति शुकगीतं गायन्ति च। छत्तीसगढक्षेत्रस्य ग्रामे–ग्रामे मेलापकाः (मंडई) आयोज्यन्ते। छत्तीसगढक्षेत्रे एते मेलापकाः अतिप्रसिद्धाः सन्ति।

अन्यानि अपि अनेकानि पर्वाणि छत्तीसगढराज्ये सोत्साहम् आयोजितानि भवन्ति। यथा खमरछट (हलषष्ठी) अक्षयतृतीया (अक्ति) आँवलानवमी, गौरागौरी इत्यादीनि। सर्वेषु उत्सवेषु राज्यस्य संस्कृतिः, लोकपरम्परा, जनजीवनं च प्रतिबिम्बितानि भवन्ति।

सम्पन्ना खलु इयं भूमिः उत्सवैः।

शब्दार्थाः

उत्सवानाम् = उत्सवों का। अमावस्याम् = अमावस्या में। उपकरणानि = औजार। पशूनाम् = पशुओं का। पचन्ति = पकाते हैं। सानन्दमुपोष्य = आनन्दपूर्वक उपवास करके । वितरन्ति = वितरण करते हैं (बाँटते हैं)। बलीवर्दाः = बैल। इत्युच्यते = (इति + उच्यते) ऐसा कहते हैं। गीतवाद्याभिः = गीतवाद्य यंत्रों से। भूषयन्ति = सजाते हैं। प्रचलति = प्रचलित है। पूर्णिमायां = पौर्णमासी में। लोकभाषायाम् = लोक भाषा में। प्रतिबिम्बितानि = प्रतिबिम्बित होते हैं।

अभ्यासः

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

(क) जनाः हरेली उत्सवं कस्मिन् मासे मन्यन्ते ?

(ख) स्त्रियः तीजापर्वणि कस्य दीर्घायुष्यं कामयन्ति ?

(ग) के यवाङ्कुराः समृद्धेः प्रतीकभूताः सन्ति ?

(घ) का एकादशी जेठौनी उच्यते ?

(ङ.) छेरछेरापर्वणि बालकाः प्रतिगृहं गत्वा किं कथयन्तः नवान्नानि याचन्ते ?

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

PSC2PH

(क) पशूनां कृते गोधूमनिर्मितां .... पाचयन्ति।

(ख) तीजापर्व भाद्रपदस्य .... उत्सवोऽयं भवति।

(ग) देव्याः दुर्गायाः विसर्जनोत्सवः .... इति उच्यते।

(घ) छत्तीसगढक्षेत्रस्य ग्रामे–ग्रामे .... आयोज्यन्ते।

प्रश्न 3. निम्नांकित शब्दों के वाक्य बनाइए (संस्कृत में) –

श्रावणमासस्य, तीजापर्व, जेठौनीपर्व, छेरछेरापर्व।

❖❖❖

तृतीयः पाठः

सङ्गणकः

अभिषेकः – हे! भ्रातः! तव हस्ते किमस्ति ?

भ्राता – अभिनन्दनपत्रमिदम्।

अभिषेकः – कस्य अभिनन्दनपत्रम्।

भ्राता – भो! अनुज ! न जानासि त्वम्। अद्य ममवर्धापनदिनमस्ति। मम मित्रेण प्रेषितमिदम्।

अभिषेकः – अतीव शोभनं चित्रं दृश्यते। शुभसंदेशोऽपि रमणीयः। कथं केन च इदं विरच्यते।

भ्राता – श्रृणु! इदं चित्रं न केनचित् चित्रकारेण चित्रितम्। संदेशोऽपि न केनापि हस्तेन लिखितः। "कम्प्यूटर" नामक यन्त्रेण सर्वं क्रियते।

अभिषेकः – भो भ्रातः! किमेतद् "कम्प्यूटर" नाम पूर्वं मया तस्य नाम न श्रुतम्। अस्य यन्त्रस्य विषये कथय।

भ्राता – 'कम्प्यूटर' विषये ज्ञातुमिच्छसि। तर्हि श्रृणु। विद्युच्छक्ति–संचालितमिदं यन्त्रम्। अनेन यन्त्रेण सर्वविधा–गणना कर्तुं शक्यते।

अभिषेकः – किमनेन यन्त्रेण चित्राणि अपि चित्रीयन्ते ?

भ्राता – आम्,–हे अनुज! अतीव चमत्कारकारि इदं यन्त्रम्। न केवलं चित्राणि चित्रीकरोति, अपितु लेखनकार्यमपि करोति। रेलयात्रायाः आरक्षणं करोति। अस्मिन् यन्त्रे पुस्तकानि अपि उद्टङ्कितानि भवन्ति।

अभिषेकः – भ्रातः ! 'कम्प्यूटर' विषये सर्वं–एतद् श्रुत्वा जिज्ञासा अतीव वर्धते। किमनेन यन्त्रेण संदेशानाम् आदानप्रदानम् अपि भवति ?

भ्राता – भो ! बालक। सुष्ठु पृष्टम्। आधुनिकयुगे अनेन सङ्गणकयन्त्रेण महत्वपूर्णसंदेशानां प्रेषणमपि भवति।

अभिषेकः – अतएव मम मित्रं "इंटरनेट" इति माध्यमेन स्वमातुलं अमेरिकादेशे संदेशं प्रेषयति। हे भ्रातः! इदं "इंटरनेट" इति किमस्ति।

भ्राता – देशविदेशेषु समाचाराणाम् आदानप्रदानार्थं परस्परं संयोजनार्थं नवीनतमं माध्यममस्ति।

अभिषेकः – अस्य यन्त्रस्य उपयोगः मया श्रुतः। सम्प्रति अहं ज्ञातुमिच्छामि यत् अस्य यन्त्रस्य आविष्कारः केन कदा कृतः।

भ्राता – कथयामि अनुज! प्रथम "कम्प्यूटरस्य" निर्माणं "चार्ल्स बैवेज" महोदयेन 1833 वर्षे कृतम्।

भ्राता – अतीव प्रसन्नोऽहम् भो ! अनुज ! अस्मिन् युगे कम्प्यूटर आवश्यकमेव। दूरदर्शनवत् अस्य एकः बहिः पटल (स्क्रीन Screen) वर्तते। तच्च "मानीटर" – इत्युच्यते। एका कीलकपट्टिका वर्तते। (Key Board) "सी.पी.यू." (सेन्ट्रल प्रोग्राम यूनिट C.P.U.) इति सङ्गणकस्य (कम्प्यूटरस्य) विषयवस्तूनाम् संग्रहकेन्द्रं भवति। "सी.पी.यू" सङ्गणकस्य मस्तिष्कः भवति। सङ्गणके एकः "माउस" वर्तते। "माउस" लेख सङ्कलनं व्यवस्थितं करोति। लेखप्रकाशनाय प्रकाशनयन्त्रं "प्रिंटर" (Printer) वर्तते। "स्कैनर" इति संकलन सामग्रीं यथावत् प्रददाति।

अभिषेकः – हे भ्रातः! ध्वनियन्त्रं किमस्ति? अहं ज्ञातुमिच्छामि।

भ्राता – अनुज! श्रृणु ! ध्वनियन्त्रस्य माध्यमेन संदेशः ''सी.पी.यू.'' समीपे प्रेष्यते। पश्चात् ''मानीटर'' इति माध्यमेन प्रकाशितः संदेशः प्राप्यते।

अभिषेकः – हे भ्रातः! एक एव प्रश्नः मम मनसि अवशिष्टः। यत् कम्प्यूटरे काचिद् क्रीडां कर्त्तुं शक्यते।

भ्राता – अनुज! शोभनः प्रश्नः। अस्मिन् यन्त्रे विविधाः क्रीडा अपि सन्ति। (कम्प्यूटरखेल) बालकाः तत्र क्रीडन्ति प्रसन्ना भवन्ति। अस्तु बालक! सम्प्रति अहम् इन्टरनेट–माध्यमेन स्वमित्राय अभिनन्दनपत्रस्य प्राप्तिसूचना प्रेषयितुं गच्छामि।

शब्दार्थाः

किमस्ति = (किम् + अस्ति) क्या है। केनचिद् = कोई। संदेशोऽपि = संदेश भी। लिखितः = (लिख्+क्त) लिखा गया है। कम्प्यूटर = सङ्गणक। ज्ञातुमिच्छति = (ज्ञातुम्+इच्छति) जानने की इच्छा। चित्राणि = चित्रों को। चित्रीकरोति = चित्रित करता है। पुस्तकानि = पुस्तकों को। उट्टङ्कितानि भवन्ति = लेख टंकित किये जाते है। संयोजनार्थं = जोड़ने के लिए। बहिः पटल = मानीटर। कीलकपट्टिका = कीलक पट्टी (Key Board)।

अभ्यासः

प्रश्न 1. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(क) सङ्गणकस्य परिभाषा देया ?

(ख) मॉनीटर इति किमुच्यते ?

(ग) सी.पी.यू. इत्यस्य का परिभाषा ?

(घ) ''स्कैनर'' किं कार्यं करोति ?

(ङ.) केन महोदयेन सङ्गणकः निर्मितः ?

(च) अधुना केन माध्यमेन अतिशीघ्रमेव पत्रं प्रेषितुं शक्यते ?

प्रश्न 2. संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(1) सर्वगणना यन्त्र सङ्गणक होता है।

(2) प्रथम सङ्गणक के रचयिता कौन थे।

(3) आधुनिक युग में सङ्गणक एक महत्वपूर्ण यन्त्र है।

(4) सङ्गणक में एक कीलक पट्टिका होती है।

(5) 'इन्टरनेट' के माध्यम से अभिनन्दन पत्र भेजता हूँ।

प्रश्न 3. ''भ्रातृ'' शब्द की कारक रचना लिखिए ?

PSUTT7

❖❖❖

चतुर्थः पाठः
''रायपुरनगरम्''

PT4PUU

इदम् अस्माकं रायपुरनगरम्। खारुन नद्याः तटे रायपुरम् अस्ति। छत्तीसगढप्रदेशस्य राजधानी रायपुरनगरम् अस्ति। अस्य नगरस्य महत्वं प्राचीनकालादेव वर्तते। इयं नगरी तडागानां नगरी इति कथ्यते। अत्र अष्टादशाधिकाः तडागाः सन्ति। अत्र अति प्राचीनः खो खो तडागः,बूढ़ातडागः, (विवेकानन्द सरोवरः) महाराजबन्धः, कंकाली तडागः इत्यादयः ऐतिहासिकं महत्वं द्योतयन्ति। इयम् नगरी छत्तीसगढक्षेत्रस्य संस्कारधानी नगरी इति अभिधीयते।

अत्र दूधाधारी मठः, महामायामंदिरं, कंकालीमंदिरं, जैतुसावमठः, महादेवघट्टः, हटकेश्वर मंदिराणि अतिप्राचीनानि सन्ति। येषां दर्शनमात्रेण हृदि शान्तिः अनुभूयते। दूधाधारीमठस्य निर्माणं १६२० संवत्सरे सञ्जातम्।

अत्र राजनांदगावनाम्नः राज्यस्य महंतघासीदासनरेशेन १८७५ ख्रीस्ततमे निर्मितं प्राचीनतम् अष्टकोणीभवनम् अस्ति। अपि च टाउनहाल इति नाम्नः शताधिकवर्षं प्राचीनभवनम् अस्ति। तथैव राजकुमार महाविद्यालयः, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुरे च दर्शनीयौ। अत्र रविशंकरःविश्वविद्यालयः, इन्दिरागाँधीकृषिविश्वविद्यालयश्च,स्तः। कुशाभाऊठाकरे पत्रकारिताविश्वविद्यालयः अपि नूतनं स्थापितम्। अत्र एकः संस्कृतमहाविद्यालयः अस्ति। यत्र साहित्य–व्याकरण–दर्शन–वेद ज्योतिष्–कर्मकाण्डश्च विषयाः सन्ति। अत्र छत्तीसगढराज्यशैक्षिकअनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, शिक्षामहाविद्यालयः जिलाशिक्षा एवं प्रशिक्षणसंस्थानश्चापि विद्यन्ते।

घन्टिकाचतुष्पथम् (घड़ी चौक) अस्य नगरस्य प्रसिद्धस्थलमस्ति। नगरस्य विवेकानन्द आश्रमे विवेकानन्दजयन्ती समारोहे विशिष्ट–प्रवचनं प्रतिवर्षं आयोज्यते। आभूषणानां, धान्यानां, वस्त्राणां च रायपुरे असंख्याः आपणाः सन्ति। अत्र लौहोद्योगः प्रसिद्धः। हस्तशिल्पादयः नगरस्य शोभां वर्धयन्ति।

खारुननद्याः तटे प्रतिवर्षं कार्तिक पूर्णिमायां मेलापकः आयोज्यते। इयं स्थली महादेवघाट इति नाम्ना ख्याता। रायपुरवासिनः उत्सवप्रियाः सन्ति। तत्र प्रतिवर्षं दुर्गोत्सवः गणेशोत्सवः ईदः क्रिसमसः इत्यादयः उत्सवाः सोत्साहं सौहार्द्रभावेन समायोज्यन्ते।

अत्रस्थः महन्त घासीदाससंग्रहालयः प्रसिद्धः। अनेकानि क्रीडाकेन्द्राणि सन्ति। यथा सुभाषक्रीडाकेन्द्रः, रविशंकरक्रीडाकेन्द्रः गॉसमेमोरियलः इति क्रीडाङ्गणाः नगरवासीनां क्रीडाप्रेमं दर्शयन्ति।

नगरस्य व्यस्ततमः सर्वेषां प्रियं स्थानं हट्टं च गोलहट्टम् अस्ति। बालकानां मनोरञ्जनाय नन्दनकाननम् अस्ति। यत्र आबालवृद्धाः मनोरञ्जनार्थम् आगच्छन्ति।

शब्दार्थाः

अस्माकम् = हमारा। इयं नगरी = यह नगरी। छत्तीसगढप्रदेशस्य = छत्तीसगढ़ प्रदेश की। तडागानाम् = तालाबों की। द्योतयन्ति = बतलाते हैं, सूचित करते हैं। अभिधीयते = कहा जाता है। अनुभूयते = अनुभव करते हैं। येषाम् = जिनका। संवत्सरे = वर्ष में। अत्र = यहां। यत्र = जहां। विद्यन्ते = विद्यमान हैं। आपणाः = दुकानें। वर्धयन्ति = बढ़ाते हैं। आयोज्यते = आयोजित होता है। रायपुरवासिनः = रायपुर में रहने वाले लोग। सौहार्द्रभावेन = मित्रभाव से। समायोज्यन्ते = सञ्चालित होते हैं। हट्टम् = बाजार। बालकानाम् = बालकों का। आबालवृद्धाः = बालक से वृद्ध तक। आगच्छन्ति = आते हैं। अष्टादशाधिकाः = अट्ठारह से भी अधिक।

अभ्यासः

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए –

(क) दूधाधारी मठस्य निर्माणं कदा सञ्जातम् ?
(ख) नगरस्य महत्वपूर्णहट्टस्य नाम किम् अस्ति ?
(ग) नगरे कति विश्वविद्यालयाः सन्ति ?
(घ) रायपुर नगरं कस्याः नद्याः तीरे स्थितम् ?

प्रश्न 2. सही जोड़ी बनाइये –

(क)	दूधाधारीमन्दिरम्	–	मनोरञ्जनाय
(ख)	खारुननदी	–	टाउन हॉल
(ग)	शताधिकवर्षम्	–	रायपुरम्
(घ)	नन्दनकाननम्	–	१६२० संवत्सरे

PTDKHH

प्रश्न 3. 'उत्सव' शब्द के रूप प्रथमा, तृतीया और सप्तमी विभक्ति में लिखिए।

पञ्चमः पाठः

चाणक्यवचनानि

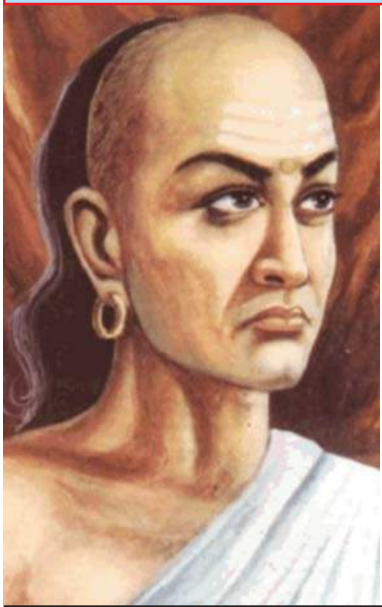

(1) गुणो भूषयते रूपं, शीलं भूषयते कुलम्।
सिद्धिर्भूषयते विद्यां, भोगो भूषयते धनम्।।

(2) कोकिलानां स्वरो रूपं स्त्रीणां रूपं पतिव्रतम्।
विद्यारूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम्।।

(3) काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदो पिककाकयोः।
वसन्ते समये प्राप्ते, काकः काकः पिकः पिकः।।

(4) धनिकः श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पञ्चमः।
पञ्च यत्र न विद्यन्ते तत्र वासं न कारयेत्।।

(5) जलबिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च।।

अर्थः

(1) गुण से रूप की शोभा होती है। शील से कुल की प्रशंसा होती है– विद्या की शोभा सिद्धि से होती है और धन की शोभा उचित भोग से होती है।

(2) कोयल की शोभा उसके मीठे स्वर से है। स्त्री की शोभा पतिव्रत धर्म से है। कुरूप विद्या से शोभा पाता है, इसी प्रकार तपस्वी की शोभा क्षमा से जानी जाती है।

(3) कौआ काला होता है। कोयल भी काली होती है दोनों में क्या भेद है ? बसन्त ऋतु के समय पता चलता है कि कौआ, कौआ है और कोयल, कोयल है।

(4) धनवान लोग, पण्डित (वेद जानने वाले), राजा, नदी, वैद्य (चिकित्सक) जिस जगह इन पाँचों का अभाव हो यानी ये पाँच जहाँ न हो वहाँ निवास नहीं करना चाहिए।

(5) एक–एक बूँद जल के गिरने से घड़ा भर जाता है इसी तरह विद्या, धन और धर्म भी धीरे–धीरे सञ्चय करने से इकट्ठे होते हैं।

शब्दार्थाः

भूषयते = शोभा देती है। कोकिलानाम् = कोयलों की। कुरूपाणाम् = कुरूपों की। तपस्विनाम् = तपस्वियों की। काकः = कौआ। कृष्णः = काला। पिकः = कोयल। बसन्ते समये प्राप्ते = बसन्त ऋतु के समय में। धनिकः = धनवान। श्रोत्रियों = वेद जानने वाले पण्डित। विद्यन्ते = रहते हैं। तत्र = वहाँ। वास = रहना। कारयेत् = करना चाहिए। जलबिन्दुनिपातेन = जल बिन्दु के गिरने से। पूर्यते = पूर्ण हो जाता है। घटः = घड़ा। सर्वविद्यानाम् = सभी विद्याओं का। धर्मस्य = धर्म का। धनस्य = धन का।

अभ्यासः

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए –

(क) कः शीलं भूषयते ?

(ख) कः स्वरः भूषयते ?

(ग) पिककाकयोः भेदः कदा भवति ?

(घ) कुत्र वासं न कारयेत् ?

(ङ.) केन क्रमशः पूर्यते घटः ?

प्रश्न 2. निम्न शब्दों का संस्कृत में वाक्य बनाइये –

(1) भूषयते	(2) कोकिलानाम्	(3) कृष्णः	(4) काकः
(5) धनिकः	(6) घटः	(7) धर्मस्य	(8) धनस्य
(9) तत्र	(10) विद्यन्ते।		

प्रश्न 3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए।

(क) विद्या सिद्धि से सुशोभित होती है।

(ख) कुरूप विद्या से शोभा पाता है।

(ग) कोयल काली होती है।

(घ) तपस्वी क्षमा से सुशोभित होता है।

(ङ.) कहाँ वास नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(1) सिद्धिर्भूषयते विद्यां .... धनम्।

(2) काकः कृष्णः पिकः कृष्णः .... ।

(3) .... क्रमशः पूर्यते घटः।

प्रश्न 5. ''राजन्'' पुल्लिङ्ग शब्द की कारक रचना लिखिए ?

प्रश्न 6. निम्नलिखित अव्ययों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(1) यत्र (2) तत्र (3) च

PTHCZS

षष्ठः पाठः
ईदमहोत्सवः

PU692F

(याकूबः सलीमः सलमा च इति त्रीणि मित्राणि गगनोन्मुखानि भूत्वा सायं द्रष्टुं चेष्टन्ते। यतः हि ईदस्य चन्द्रदर्शनं नातीव सरलम्।)

याकूबः – अद्य चन्द्रस्य दर्शनं जातम् श्वः एव ईदस्य महोत्सवो भविष्यति।

सलीमः – मित्र! ईद दिवसस्य निर्णय : क : ?

याकूबः – दिल्लीतः इमामो महोदयः करिष्यति। रात्रौ एव तस्य उद्घोषो भविष्यति। सखि सलमे! किं त्वम् उद्घोषं ध्यानेन श्रुत्वा आवां सूचयिष्यसि?

सलमा – अहम् अवश्यं सूचयिष्यामि। इमाममहोदयः रात्रौ संसूचयति यत् अद्य चन्द्रदर्शनं जातम्। अतः श्वः एव ईदस्य उत्सवो भविष्यति। तम् उद्घोषं श्रुत्वा अतीव प्रसन्ना सलमा याकूबं सलीमं च सूचयति।

याकूबः – श्वः वयं प्रातःकाले एव "ईदगाहं" चलिष्यामः।

सलीमः – वयं तत्र गमनाय स्वच्छानि, नवानि वस्त्राणि एव धारयेम्। सखि सलमे ! त्वं किं करिष्यसि?

सलमा – सखे! अहम् ईदोत्सवे नवानि एव वस्त्राणि धारयिष्यामि।

याकूबः – तर्हि युवां श्वः ममैव गृहम् आगमिष्यथः। वयम् इतः युगपदेव ईदगाहं गमिष्यामः।

प्रातःकाले सलीमसलमे सोल्लासं याकूबस्य गृहम् आगच्छतः। ततः ते ईदगाहं प्रति गच्छन्ति। तत्र प्रथमं ते पङ्क्तौ स्थित्वा स्व–ईश्वरस्य प्रार्थनां कुर्वन्ति। तत्पश्चात् परस्परं स्नेहेन आलिङ्गन्ति। ते मेलापकस्य मनोहरं दृश्यं दृष्ट्वा सुस्वादूनि मिष्टान्नानि क्रीत्वा गृहं प्रत्यागच्छन्ति। सायं पुनः ते अन्योन्यं गृहं गत्वा दीर्घसूत्रिकाः खादन्ति परस्परं मिलन्ति च।

शब्दार्थाः

जातम्	= हुआ।	श्वः	= कल (आने वाला)।
भविष्यति	= होगी।	श्रुत्वा	= सुनकर।
सूचयिष्यसि	= सूचित करोगे।	चलिष्यामः	= चलेंगे।
गमनाय	= जाने के लिये।	धारयेम्	= धारण करें।
वस्त्राणि	= वस्त्रों को।	आगमिष्यथ	= आओगे।

उद्घोषम्	= घोषणा।	इतः	= यहां से।
युगपदेव	= एक साथ ही।	गमिष्यामः	= जायेंगे।
सुस्वादूनि	= मीठी।	क्रीत्वा	= खरीदकर।
गत्वा	= जाकर।	खादन्ति	= खाते हैं।
दीर्घसूत्रिकाः	= सिवइयाँ।	कुर्वन्ति	= करते हैं।
गच्छन्ति	= जाते हैं।		

प्रत्यागच्छन्ति = लौटकर आते हैं। (प्रति+ आगच्छन्ति)

अभ्यासः

प्रश्न 1. संस्कृत में उत्तर दीजिए –

(क) याकूबः, सलीमः सलमा च कं द्रष्टुं चेष्टन्ते ?

(ख) ईददिवसस्य निर्णयं कः करोति ?

(ग) ईदस्य उद्घोषं श्रुत्वा सलमा कौ सूचयति ?

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये –

(क) अद्य चन्द्रस्य दर्शनं .... ।

(ख) .... अवश्यं सूचयिष्यामि।

(ग) ततः ते .... प्रति गच्छन्ति।

प्रश्न 3.(क) सन्धि विच्छेद कीजिए –

गगनोन्मुखानि, ईदोत्सवे, ममैव,

प्रश्न 4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) चन्द्र का दर्शन कब होगा ?

(ख) उसे नवीन वस्त्र धारण करना चाहिए।

(ग) क्या तुम मेरे घर जाओगे ?

(घ) वहाँ ईश की प्रार्थना होती है।

PUF543

सप्तमः पाठः
गीताऽमृतम्

(1) वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ।। 1।।

(2) नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।। 2।।

(3) जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं–जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।। 3।।

(4) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।। 4।।

(5) यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।। 5।।

(6) परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ।। 6।।

(7) श्रध्दावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।। 7।।

(8) यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ।। 8।।

(9) यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।। 9।।

हिन्दी अर्थ

(1) जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है।

(2) इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सूखा सकती।

(3) क्योंकि इस मान्यता के अनुसार जन्मे हुए की मृत्यु निश्चित है और मरे हुए का जन्म निश्चित है। इससे भी इस बिना उपाय वाले विषयों में तू शोक करने के योग्य नहीं है।

(4) तेरा कर्म करने में ही अधिकार है उसके फलों में कभी नहीं। इसलिये तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

(5) हे भारत! जब–जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब–तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।

(6) साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग–युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

(7) जितेन्द्रिय, साधन परायण और श्रद्धावान मनुष्य ज्ञान को प्राप्त होता है तथा ज्ञान को प्राप्त होकर वह बिना विलम्ब के तत्काल ही भगवत्प्राप्ति रूप परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है।

(8) जो पुरुष सम्पूर्ण भूतों में सबके आत्मरूप मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और सम्पूर्ण भूतों को मुझ वासुदेव के अन्तर्गत देखता है, उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता।

(9) हे राजन्! जहाँ योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण है और जहाँ गाण्डीव धनुर्धारी अर्जुन है, वहीं पर श्री, विजय,विभूति और अचल नीति है – ऐसा मेरा मत है।

शब्दार्थाः

वासांसि = वस्त्र, कपड़े। जीर्णानि = पुराने, सड़े–गले। क्लेदयन्ति = गीला करते हैं। जातस्य = उत्पन्न हुए की। ध्रुवः = निश्चित। शोचितुम् = सोचने के लिए। अर्हसि = योग्य हो। अपरिहार्य = अटल। ग्लानिः = हानि। सृजाम्यहम् = (सृजामि+अहम्) मैं जन्म लेता हूँ। पार्थ = अर्जुन।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रश्न 1. संस्कृत में उत्तर लिखिए –

(क) कीदृशं शरीरं विहाय देही नवशरीरं धारयति ?

(ख) शस्त्राणि कं न छिन्दन्ति ?

(ग) पावकः कं न दहति ?

(घ) ईश्वरः किमर्थं संभवति ?

(ङ.) ज्ञानं कः लभते ?

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(क) नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि ....।

(ख) ...., ध्रुवं जन्म मृतस्य।

(ग) यदा–यदा हि धर्मस्य च, ...।

(घ) ...., संभवामि युगे–युगे।

(ङ.) श्रद्धावान् लभते ज्ञानं, ...।

प्रश्न 3. गीताऽमृतम् पाठ के चौथे एवं पाँचवें श्लोक को कण्ठस्थ कीजिए।

प्रश्न 4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) आत्मा मरती नहीं है।

(ख) आत्मा को अग्नि जला नहीं सकती।

(ग) तुम्हारा कर्म में ही अधिकार है।

(घ) फल की इच्छा मत करो।

(ङ.) यह योगेश्वर कृष्ण है।

प्रश्न 5. संधि विग्रह कीजिए –

PUXH7D

(क) कर्मण्येवाधिकारस्ते – ....

(ख) ग्लानिर्भवति – ....

(ग) सृजाम्यहम् – ....

(घ) श्रीर्विजयो – ....

(ङ.) नीतिर्मतिर्मम – ....

अष्टमः पाठः
भोरमदेवः

छत्तीसगढक्षेत्रस्य अनेकानि प्राचीनमन्दिराणि ऐतिहासिकस्थलानि अद्यापि छत्तीसगढस्य समृद्धिं गौरवशालीपरम्परां स्मारयन्ति। एवमेव एकं स्थानम् अस्ति, सः भोरमदेवः। कवर्धा जिलान्तर्गतं १६ (षोडश) कि.मी. दूरे सतपुड़ा–विन्ध्याचल–पर्वत–श्रेणीनां मध्ये प्रतिष्ठितः। अस्य मन्दिरस्य वैशिष्ट्येन अयं छत्तीसगढस्य खजुराहो इति अभिधीयते। भोरमदेवस्य मन्दिरं न केवलं छत्तीसगढप्रदेशस्य अपितु सम्पूर्णदेशे ऐतिहासिकपुरातात्विकधार्मिकदृष्टया महत्वपूर्णं स्थलम् अस्ति। वस्तुतः जनाः भोरमदेवं गोंडजातीनाम् आराध्यदेवः इति मन्यन्ते। अस्मात् कारणात् अस्य मन्दिरस्य नाम भोरमदेवः जातम्।

इतिहासकारसरअलेक्जेण्डरकनिंधममहोदयस्य अनुसारेण एतत् मन्दिरं विष्णुमन्दिरम् आसीत्। कालान्तरे गोंडशासकैः पूर्वस्थापितलक्ष्मीनारायणस्य प्रतिमाम् अपसार्य शिवलिङ्गं स्थापितम्। मंदिरे उत्कीर्णलेखैः वास्तुकलाभिश्च परिलक्ष्यते, यत् मन्दिरम् इदम् एकादशे ख्रीस्ताब्दे निर्मितम्।

नागरशैल्यां पूर्वाभिमुखमुख्यप्रवेशद्वारम् अस्ति। अस्मिन् मन्दिरे द्वारत्रयमस्ति। भोरमदेवस्य मन्दिरस्य निर्माणे खजुराहो उडीसायाः कोणार्कस्थित सूर्यमन्दिरस्य वास्तुशिल्पस्य अनुकृतिः परिलक्ष्यते। मन्दिरस्य गर्भगृहे गरुडस्थितभगवतः विष्णोः प्रतिमा, पञ्चमुखीनागः, नृत्यतः गणपतेः, अष्टभुजप्रतिमाश्च सन्ति। गर्भगृहे मुख्यतः शिवलिङ्गमेव मण्डितमस्ति।

मन्दिरं निकषा उमामहेश्वर–कालभैरव–द्विभुज–सूर्य प्रतिमाः शिव प्रतिमाश्च सन्ति। मन्दिरस्य उत्तरदिशि एकः विशालः सरोवरोऽपि अस्ति। भोरमदेवस्य समीपे अन्येषु दर्शनीयस्थलेषु चौरग्रामस्य निकटे आयताकारं पाषाणनिर्मितं ''मण्डलामहलम्'' अस्ति।

चौरग्रामस्य समीपे इष्टिकापाषाणेन निर्मितम् एकं मन्दिरं ''छेरकी महलम्'' इति नाम्ना ख्यातम्। अस्य मन्दिरस्य समीपे नैकापि अजास्ति तथापि मन्दिरस्य गर्भगृहे अजायाः शरीरेण निसृतं गन्धं जनाः अनुभवन्ति। एतदेव अस्य मन्दिरस्य वैशिष्ट्यम् अस्ति।

पावसवसन्तयोः काले हरीतिमाच्छादितपर्वतश्रृंखलानाम् अङ्के स्थितभोरमदेवस्य मन्दिरमस्ति। अस्य मोहकदृश्यानि वीक्ष्य जनाः आश्चर्यार्णवे निमज्जन्ति। प्रतिवर्षे चैत्रत्रयोदशम्यां तिथौ अत्र दिवसत्रयस्य पारम्परिकमेलापकः आयोज्यते। पर्यटनविकासस्य दृष्ट्या अयं मेलापकः शासनेन **"भोरमदेव महोत्सवः"** इति नाम्ना समायोज्यते। **"धन्यो भोरमदेवः शिवमस्तु"**

शब्दार्थाः

स्मारयन्ति = याद दिलाते हैं। अद्यापि = आज भी। पर्वतश्रेणीनां मध्ये = पर्वत श्रेणियों के बीच। वैशिष्टयेन = विशेषता से। अभिधीयते = कहते हैं। अपितु = बल्कि। दृष्ट्या = दृष्टि से। जातीनाम् = जातियों के। मन्यन्ते = मानते हैं। परिलक्ष्यते = दिखता है। नागरशैल्याम् = नागर शैली में। मण्डितम् = सुन्दर। निकषा = समीप में। उत्तरदिशि = उत्तर दिशा में। सरोवरोऽपि = सरोवर भी (तालाब भी)। दर्शनीयस्थलेषु = दर्शनीय स्थलों में। निर्मितम् = बनाया गया है। इष्टिका = ईंट। ख्यातम् = प्रसिद्ध। अजा = बकरी। निसृतगंधम् = निकलती गंध। अनुभवन्ति = अनुभव करते हैं। पावसबसन्तयोः = वर्षा और बसन्त के। हरीतिमाच्छादितम् = हरियाली से ढंकी हुई। पर्वतश्रृंखलानाम् = पर्वत श्रेणियों का। अंके = गोद में। आश्चर्याणवे = आश्चर्य के सागर में। निमज्जन्ति = डूबो देती है। समायोज्यते = समायोजित होता है।

अभ्यास प्रश्नाः

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए –

(क) छत्तीसगढस्य खजुराहो किम् अस्ति ?

(ख) कस्य प्रतिमाम् अपसार्य शिवलिङ्गं प्रतिष्ठितम् ?

(ग) कस्यां शैल्यां पूर्वाभिमुखमुख्यप्रवेशद्वारम् अस्ति ?

(घ) "मण्डला महलम्" कुत्र निर्मितम् अस्ति ?

(ङ) इष्टिकापाषाणनिर्मितं मन्दिरं केन नाम्ना ख्यातम् ?

(च) भोरमदेवः मेलापकः कस्यां तिथौ आयोज्यते ?

प्रश्न 2. युग्म कीजिए –

PVGNAN

(1)	भोरमदेवः	–	गन्धम्
(2)	नागरशैल्याम्	–	शिवलिङ्गम्
(3)	गर्भगृहे	–	मण्डलामहलम्
(4)	विशालसरोवरः	–	छत्तीसगढस्य खजुराहो
(5)	अजा	–	उत्तरदिशि
(6)	आयताकारं पाषाणनिर्मितम्	–	प्रवेशद्वारम्

प्रश्न 3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) यहाँ अनेक मन्दिर हैं। (ख) भोरमदेव एक दर्शनीयस्थल है।

(ग) इस मंदिर में तीन द्वार हैं। (घ) गर्भगृह में शिवलिङ्ग है।

(ङ) चैत्रमास में मेला लगता है।

प्रश्न 4.(क) अकारान्त "देव"शब्द की कारक रचना सभी विभक्तियों में लिखिए ?

(ख) स्मृ (स्मर्) शब्द की काल रचना लोट् एवं विधिलिङ् लकार में लिखिए?

❖❖❖

नवमः पाठः

आदर्शछात्रः

(कृष्णवस्त्रमयं, दण्डमण्डितं, छत्रं दक्षिणहस्ते निधाय अध्यापकः सप्तम्यां कक्षायां प्रविशति, छात्रान् प्रति प्रश्नं करोति)

अध्यापकः – भोः भोः छात्राः! दक्षिणहस्ते इदं किं विद्यते ?

छात्राः – मान्याः गुरुवर्याः! भवतां दक्षिणहस्ते छत्रं विराजते।

अध्यापकः – साधु, साधु, साधु इति वारत्रयमुक्त्वा पुनः छात्रान् प्रतिप्रश्नं विदधाति, अनेन छत्रेण किं क्रियते ?

छात्राः – वन्दनीयाः गुरुवर्याः! अनेन ग्रीष्मकाले आतपात्, वर्षाकाले जलवर्षणात् च अस्माकं शरीररक्षणं क्रियते।

अध्यापकः – शोभनम्, शोभनम्, शोभनम् इति वारत्रयमुक्त्वा अध्यापकः छात्रान् उपदिशति। यूयं सर्वे छात्राः जानीथ? छात्र शब्दः अनेनैव छत्रशब्देन निष्पन्नो विद्यते। छत्रशब्दः आवरण वाचकः। इत्थं च ''गुरोदोषावरणं छत्रं तच्छीलं यस्य सः छात्रः'' इतिछात्रशब्दस्य सुस्पष्टः अर्थः। यूयं सर्वे अपि छात्राः भारतस्य आदर्शछात्राः भवेयुः इयं मदीया हार्दिकी शुभकामना। येन विद्यालये, समाजे, राष्ट्रे च सर्वम् अनुशासनं प्राचीना गुरुशिष्यपरम्परा सामाजिकी सुव्यवस्था, एकता, अखण्डता, साम्प्रदायिकी सद्भावना, मानवमूल्यानि च संरक्षितानि भवेयुः।

छात्राः – पूज्याः गुरवः! आदर्श छात्रेषु के के गुणाः अपेक्षिताः भवन्ति ? तत्प्राप्त्यर्थम् अस्माभिः किं किं करणीयम् ?

अध्यापकः – भोः भोः छात्राः। यूयं सर्वेसावधानाः। छात्राणामध्ययनं तपः इति आदर्शछात्रस्य मूलभूतो गुणः। अतएव आदर्शछात्रः अध्ययनशीलः भवति। सः सच्चरित्रः अनुशासितश्च भवति। स सर्वदा पित्रोः गुरोः श्रेष्ठजनानां च आज्ञां परिपालयति सामान्यछात्राणाम् अपेक्षया आदर्शछात्रेषु अधिकाः विशिष्टाः गुणाः भवन्ति।

आदर्शछात्रः प्रातः समयेनोत्थाय पित्रोः चरणौ सादरं नमति। शौचादिक्रियां समाप्य ईश्वरस्याराधनं करोति। आदर्शछात्रः हट्टे पण्यवीथिकायां निष्प्रयोजनं न परिभ्रमति।

अथ च यथोपलब्धम् आहारं विधाय अध्ययनोपकरणानि पुस्तकादीनि च नीत्वा यथा समयं विद्यालयं गच्छति। स न केवलं पाठाभ्यासं करोति, अपितु निखिलमपि सामाजिककार्यं परिश्रमेण सम्पादयति। विद्यालये स गुरुजनान् सादरं सश्रद्धं सविनयं च अभिवादयति, सहपाठिनः

मित्राणि च नमस्करोति । प्रार्थना प्रसङ्गे, अध्ययने, सांस्कृतिककार्यक्रमे क्रीडासु, सर्वेषु विद्यालयीनकार्यकलापेषु सोत्साहं प्रतिभागं करोति।

विनम्रता–सहिष्णुता–कर्त्तव्यपरायणता–अनुशासनप्रियता–सत्यनिष्ठा गुणग्राहिता विश्वबन्धुत्वादयः आदर्शछात्रस्य विशिष्टाः गुणाः भवन्ति। इदानीं छात्रेषु आदर्श – गुणानाम् अभावः दृश्यते। युष्माभिः सर्वैः आदर्शछात्राणाम् आदर्शगुणाः अनुकरणीयाः अनुसरणीयाश्च।

शब्दार्थाः

क्रियते = किया जाता है। प्रविशति = प्रवेश करता है। निधाय = लेकर, रखकर। वारत्रयमुक्त्वा = तीन बार कहकर। आतपात् = धूप से। गुरोर्दोषावरणम् = गुरु के दोष को ढकना। हट्टे = बाजार में। यस्य = जिसका। वीथिकायां = गलियों में। निष्प्रयोजनम् = बिना काम के, बिना मतलब के। परिभ्रमति = घूमता है। विशिष्टाः = विलक्षण, अद्भुत। निखिलमपि = सम्पूर्ण भी। परिश्रमेण = मेहनत के साथ। गुणग्राहिता = अच्छाई को अपनाना। आवरणम् = ढकना। प्राप्त्यर्थम् = पाने के लिए।

अभ्यासः

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए –

(क) कः सप्तम्यां कक्षायां प्रविशति ?

(ख) कः आदर्शछात्रस्य मूलभूतो गुणः ?

(ग) कः सर्वेषु विद्यालयीनकार्यकलापेषु सोत्साहं प्रतिभागं करोति ?

(घ) के आदर्शछात्रस्य विशिष्टाः गुणाः सन्ति ?

(ङ) सश्रद्धं सविनयं च कः अभिवादयति ?

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(क) भवतां दक्षिणहस्ते .... विराजते।

(ख) .... छात्रान् उपदिशति।

(ग) आदर्शछात्रः मातापित्रोः .... सादरं नमति।

प्रश्न 3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) दाहिने हाथ में क्या है ?

(ख) अध्यापक छात्रों को उपदेश देता है।

(ग) आदर्श छात्र के कौन–कौन से गुण हैं ?

(घ) वह परिश्रम से स्वाध्याय करता है।

(ङ) वह प्रातःकाल उठकर माता–पिता के चरण छूता है।

प्रश्न 4. सन्धि विच्छेद कीजिए –

वारत्रयमुक्त्वा, शक्तिरेव, प्राप्त्यर्थम्, ईश्वरस्याराधनम्, यथोपलब्धम्।

PVZFDY

दशमः पाठः
''छत्तीसगढराज्यस्य लोकभाषाः''(छत्तीसगढ़ की बोलियाँ)

PH9BFL

छत्तीसगढप्रदेशः लोकगीत, लोकनृत्य, लोकभाषाणां संगमस्थलमस्ति। लोकसंस्कृतेः दृष्ट्या सत्यं शिवं सुन्दरम् इत्युक्तेः अस्य राज्यस्य प्रखराभिव्यक्तिं प्रदर्शयति। छत्तीसगढराज्यस्य उत्तरदिशि झारखण्डप्रदेशः दक्षिणदिशि आंध्रप्रदेशः पूर्वदिशि उडीसाप्रदेशः पश्चिम दिशायां महाराष्ट्रप्रदेशाश्च विराजन्ते। छत्तीसगढप्रदेशः स्वकीयसंस्कृतिमधिकृत्य लोकप्रसिद्धः। छत्तीसगढराज्ये सप्तविंशतिजिलाः विद्यन्ते। अस्मिन् राज्ये विविधलोक भाषाभाषिणश्च निवसन्ति। छत्तीसगढराज्यस्य कटकः(राजधानी) रायपुरमस्ति यद् छत्तीसगढराज्यस्य हृदयस्थलम् अभिधीयते। रायपुरजिलान्तर्गतं हल्बी, गोडी, छत्तीसगढी, उडिया लोकभाषाश्च अतिप्रसिद्धाः। राज्यस्य उत्तरभागे कोरिया जिलास्ति। यत्र जनाः भोजपुरी, सरगुजिया, कुडुक, छत्तीसगढी लोकभाषायां च स्वकीयाभिव्यक्तिं कुर्वन्ति।

कोरिया जिला समीपे सरगुजा जिला स्थितास्ति। सरगुजा जिलायां सादरी, भोजपुरी, सरगुजिया, कुडुक, छत्तीसगढ़ी प्रभृतीनां लोकभाषाणां लोकजीवने प्रतिदिनं व्यवहारो भवति। राज्यस्य उत्तरदिशायामेव जशपुरजिला विद्यते। अस्यां जिलायां सादरी, भोजपुरी, कुडुक, छत्तीसगढी इत्यादयाः लोकभाषाश्च सुविख्याताः सन्ति। छत्तीसगढराज्यस्य विद्युत् केन्द्रः कोरबा जिलातिप्रसिद्धा। अस्मिन् क्षेत्रे छत्तीसगढी मागधी च लोकभाषां सर्वेजनाः वदन्ति। राज्यस्य उत्तरपूर्वस्यां रायगढजिला स्थितास्ति। अस्यां जिलायां सादरी, कुडुक, गोडी, छत्तीसगढी, उडिया, बंगाली च इति लोकभाषाः अतिप्रसिद्धाः। जनाः आसां लोकभाषाणां स्वकीयव्यवहारे प्रयोगं कुर्वन्ति।

छत्तीसगढराज्यस्य उत्तरदिशायामेव जांजगीर जिलाअस्ति। यत्र ''छत्तीसगढी'' लोकभाषायाः जनाः प्रयोगं कुर्वन्ति। राज्यस्य बिलासपुरजिलान्तर्गतं छत्तीसगढीबघेली च भाषाद्वयेन जनाः व्यवहरन्ति। एतादृशस्य छत्तीसगढस्य उत्तरपश्चिमदिशायां कवर्धादुर्गराजनांदगाँव जिला च विद्यन्ते। कवर्धा जिलायां गोडी छत्तीसगढी च लोकभाषाभ्यां परस्परं सस्नेहेन स्वविचारान् प्रस्तुवन्ति। दुर्ग जिलायां हल्बी–गोडी–छत्तीसगढी च लोकभाषाः इति प्रसिद्धाः, राजनादगाँव जिलान्तर्गतं हल्बीगौड़ीछत्तीसगढीमराठी च लोकभाषाः सुप्रसिद्धाः। छत्तीसगढस्य पूर्वदिशायां महासमुन्दजिला विराजते। यत्र जनाः छत्तीसगढीउडिया च लोकभाषा माध्यमेन स्वविचारान् प्रदर्शयन्ति।

CMYK CMYK

छत्तीसगढराज्यस्य मध्यभागे धमतरी जिलास्ति। अत्र १८८५ ख्रीस्ततमे काव्योपाध्याय हीरालाल महाभागेन छत्तीसगढीभाषायाः प्रथमं व्याकरणं लिखितम्। धमतरी जिलायां हल्बीछत्तीसगढी च भाषे अतिप्रसिद्धे। राज्यस्य दक्षिणभागे काँकेरजिलास्ति अत्र हल्बीछत्तीसगढीमराठीबंगाली च लोकभाषाः अतिलोकप्रियाः। राज्यस्य दक्षिणदिशासु बस्तरजिला आदिवासीक्षेत्रस्य नाम्ना प्रसिद्धा। बस्तरे हल्बी–गोडी–भतरी–दोरली–परजी–गदबी–छत्तीसगढी–उडिया–प्रभृतयः लोकभाषाः प्रचलिताः। बस्तरस्य दक्षिणभागःएव दन्तेवाडा दन्तेश्वरीदेव्याः नाम्ना प्रसिद्धा। यत्र हल्बीगोंडीदोरली छत्तीसगढीउडियातेलुगु इत्यादयः लोकभाषाः प्रसिद्धाः। बीजापुर जिलान्तर्गतं तेलगु–गोडी–भतरी–हल्बी इत्यादयः लोकभाषाः अति प्रसिद्धाः। नारायणपुर जिलायां गोड़ी–हल्बी–दोरली–प्रभृतयः लोकभाषा प्रचलितः।

सुकमाजिलान्तर्गते छत्तीसगढी–भतरी–हल्बी–गोडी–दोरली–तेलगू–प्रभृतयः लोकभाषाः प्रचलिताः। कोण्डागाँवजिलान्तर्गते छत्तीसगढी–हल्बी–गोडी–भतरी–परजी–दोरली–गदबी–प्रभृतयः लोकभाषाः प्रसिद्धाः। गरियाबंद–जिलायां छत्तीसगढी–उडिया भाषे प्रचलिते। बलौदाबाजार–भाटापारा–जिलायां छत्तीसगढी गोडी च लोकभाषाद्वे प्रचलिते। बालोदजिलान्तर्गते छत्तीसगढी–गोडी–हल्बी प्रभृतयः लोकभाषाः लोकप्रियाः। बेमेतरा–जिलायां छत्तीसगढी–हल्बी–गोडी–लोकभाषाः प्रचलिताः। बलरामपुर–जिलायां छत्तीसगढी–सादरी–भोजपुरी लोकभाषाः प्रचलिताः। सूरजपुर–जिलान्तर्गते छत्तीसगढी–सादरी–भोजपुरी–सरगुजिहा–प्रभृतयः लोकभाषाः अतिप्रियाः। मुंगेली–जिलान्तर्गते छत्तीसगढी–बघेली–गोडी प्रभृतयः लोकभाषाः प्रचलिताः।

छत्तीसगढप्रदेशः एकम् उद्यानमिव प्रतीयते। अस्मिन् उद्याने नानाविधानि पुष्पाणि विकसन्ति। लोकभाषाणाम् एतानि पुष्पाणि छत्तीसगढ राज्यस्य एकतां परस्परस्नेहं च प्रदर्शयन्तीति।

शब्दार्थाः

लोकभाषाः = बोलियाँ। लोकभाषाणाम् = बोलियों का। प्रदर्शयति = प्रदर्शित करता है। उत्तरदिशि = उत्तर दिशा में। स्वकीयम् = अपना। संस्कृतिमधिकृत्य = संस्कृति के विषय में। यद् = जो। अभिधीयते = कहते हैं। कुर्वन्ति = करते हैं। प्रभृतीनाम् = इत्यादि का। व्यवहरन्ति = व्यवहार करते हैं। वदन्ति = कहते हैं। विद्यन्ते = विद्यमान हैं। विराजते = स्थित है। विचारान् = विचारों को। दिशासु = दिशाओं में। नाम्ना प्रसिद्धा = नाम से प्रसिद्ध। उद्यानमिव (उद्यानम्+इव) = उद्यान के समान। प्रतीयते = प्रतीत होता है। नानाविधानि पुष्पाणि = अनेक प्रकार के पुष्प। विकसन्ति = विकसित होते हैं।

अभ्यासः

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए –

(क) छत्तीसगढराज्यस्य स्थितिः का अस्ति ?

(ख) छत्तीसगढराज्ये कति जिलाः सन्ति ?

(ग) छत्तीसगढस्य हृदयस्थलं नगरं किमस्ति ?

(घ) निम्नांकित–जिलानां द्वे लोकभाषे लिखतु –

(1) रायपुर ....

(2) सरगुजा ....

CMYK CMYK

(3)	बेमेतरा	....	....
(4)	सुकमा	....	....
(5)	मुंगेली	....	....
(6)	गरियाबंद	....	....
(7)	धमतरी	....	....
(8)	रायगढ	....	....
(9)	जशपुर	....	....
(10)	बिलासपुर	....	....
(11)	दुर्ग	....	....
(12)	बस्तर	....	....
(13)	दन्तेवाड़ा	....	....
(14)	बीजापुर	....	....
(15)	नारायणपुर	....	....

प्रश्न 2. (क) राजनाँदगाँवजिलान्तर्गतं कति लोकभाषाः जनाः प्रयोगं कुर्वन्ति ?

(ख) का जिला आदिवासिक्षेत्रस्य नाम्ना प्रसिद्धा ?

(ग) छत्तीसगढप्रदेशः किमिव प्रतीयते ?

प्रश्न 3. पाठगत युग्म कीजिए –

(1)	काँकेर	–	भोजपुरी, सरगुजिया, कुडुक, भतरी, छत्तीसगढी, मागधी
(2)	जाँजगीर	–	गोडी, छत्तीसगढी
(3)	महासमुन्द	–	हल्बी, छत्तीसगढी, मराठी, बंगाली
(4)	कोरिया	–	छत्तीसगढी
(5)	जशपुर	–	सादरी, कुडुक, गोडी, छत्तीसगढी, उडिया, बंगाली
(6)	कवर्धा	–	छत्तीसगढी, मागधी
(7)	रायगढ़	–	छत्तीसगढी, उडिया
(8)	कोरबा	–	सादरी, भोजपुरी, कुडुक, छत्तीसगढी

प्रश्न 4. निम्नधातु का लट् एवं लोट् लकार में प्रयोग कीजिए –

(क) ''कृ'' (ख) ''अस्''

प्रश्न 5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) यह लोकभाषा है।

(ख) छत्तीसगढ़ प्रदेश में सत्ताईस जिले हैं।

(ग) छत्तीसगढ़ प्रदेश में छत्तीसगढ़ी भाषा प्रसिद्ध है।

(घ) बस्तर जिला आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है।

(ङ) सरगुजा जिला में सरगुजिया बोली प्रसिद्ध है।

PHI7H9

PHS3IH

एकादशः पाठः
पितरं प्रति पत्रम्

पूर्वमाध्यमिकः अभ्यासशाला
शङ्करनगरं, रायपुरम्
दिनाङ्कः 05–08–2017

पूज्यपितृचरणयोः

सादरं प्रणमामि

अत्र कुशलं तत्रास्तु। भवता प्रेषितं पत्रं मया ह्यः प्राप्तम्। अहं पञ्चशतं रुप्यकाणि कांक्षे अतः धनादेशेन (मनीआर्डर) प्रेषयन्तु।

अहम् अध्ययने मनोयोगेन लीनः अस्मि। मया प्रायः प्रत्येकं पुस्तकं वारमेकं पठितम्। इदानीं पुनरावृत्तिम् आरब्धवान् अस्मि।

अहं आशां करोमि यत् वार्षिक्यां परीक्षायाम् एतस्मिन् वर्षे सर्वप्रथमक्रमाङ्के उत्तीर्णः भविष्यामि। भवदादेशानुसारम् अहं स्वहस्तलेखं संशोधितवान् अस्मि।

भवता अत्र दीपावल्याः अवसरे अवश्यम् आगन्तव्यम्। इति मे प्रार्थना।

भवतां पत्रोत्तरस्य प्रतीक्षारतः।

आज्ञाकारीपुत्रः
वासुदेवः

शब्दार्थाः

ह्यः = बीता हुआ कल। मया = मेरे द्वारा। पञ्चशतम् = पाँच सौ। कांक्षे = चाहता हूँ। धनादेश = मनीआर्डर। वारमेकम् = एक बार। हस्तलेखम् = लिखावट।

अभ्यासः

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

PX1YKJ

(क) वासुदेवः कं प्रति पत्रं लिखति ?

(ख) वासुदेवः कति रुप्यकाणि वाञ्छति ?

(ग) वासुदेवः किं संशोधितवान् ?

(घ) वासुदेवः पत्रमाध्यमेन पितरं कदा आह्वयते ?

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(क) भवता प्रेषितं पत्र मया .... प्राप्तम्।

(ख) रुप्यकाणि .... प्रेषयन्तु।

(ग) मया प्रत्येकं पुस्तकं .... पठितम्।

प्रश्न 3.(क) ''अस्मद्'' सर्वनाम के रुप सभी विभक्तियों में चलाइए।

(ख) कृ धातु के रूप लट् व लृट् लकार में चलाइए।

(ग) विद्यालय में प्रधानाचार्य को पत्र लिखने का अभ्यास करेंगे।

द्वादशः पाठः
''संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्''

PXAUH7

सर्वासु भाषासु संस्कृतभाषा प्राचीनतमा भाषा अस्ति। अस्माकं संस्कृतिः भाषायामेव निहिता। संसारस्य प्राचीनतमाः चत्वारः वेदाः ऋग्वेदः, यजुर्वेदः सामवेदः अथर्ववेदश्च संस्कृतभाषायां विद्यन्ते। वाल्मीकिना विरचितं रामायणं प्रथमं छन्दोबद्धं महाकाव्यम् अस्ति। अस्मिन्नेव काव्ये सामाजिकाः आदर्शाः निहिताः सन्ति। यथा रामस्य पितृभक्तिः, भरतस्य त्यागः, दशरथस्य पुत्रवात्सल्यं च। महाभारतं नाम संस्कृतस्य ग्रंथः, विश्वज्ञानकोशः प्रतीयते। गीतापि महाभारतस्य एव महत्त्वपूर्णांशः अस्ति। अस्यां भाषायां कविकुलगुरुकालिदासेन अभिज्ञानशाकुन्तलं नाम विश्वप्रसिद्धं नाटकं विरचितम्। गीति काव्येषु तस्य मेघदूतं प्रसिद्धम् अस्ति। जयदेवेन विरचितं गीतगोविन्दं नामकं गीतिकाव्यमपि सर्वाधिकं लोकप्रियम् अस्ति।

पुरा भारते प्रायः सर्वेजनाः संस्कृतभाषायामेव परस्परम् आलपन्ति स्म। तद्यथा एकदा–भोजराजः गच्छन् मार्गे एकं भारवाहकं दृष्टवान्। तस्य शिरसि गुरुतरं भारं दृष्ट्वा भोजराजः तमपृच्छत्– ''अपि भारो बाधति ?

भारवाहकः शीघ्रमेव अवदत्– ''भारो न बाधते राजन्!'' यथा ''बाधति–बाधते''। अनेन प्रतीयते यत् सामान्योऽपि जनः संस्कृतभाषां जानाति स्म।

शनैः–शनैः संस्कृत भाषायाः व्यवहारः शिथिलोऽभवत् किन्तु अद्यत्वेऽपि संस्कृतकक्षासु संस्कृतभाषां जीवितभाषा रूपेण पाठ्यते। भाषासु मधुरा इयं भाषाभारतीयसंस्कृतेः रक्षार्थं ज्ञानवर्धनार्थं च संस्कृतभाषा अवश्यमेव पठितव्या।

शब्दार्थाः

प्रतीयते = प्रतीत होता है। विरचितम् = बनाया गया। निहिताः = रखी हुई। भारवाहकः = बोझा ढोने वाला। आलपन्ति स्म = बातचीत करते थे। पठितव्या = पढ़ी जानी चाहिए। शिरसि = सिर पर।

अभ्यासः

प्रश्न 1. संस्कृत भाषा में उत्तर लिखिए –

(क) रामायणस्य महाकाव्यस्य रचनां कः अकरोत् ?

(ख) कालिदासः कस्य गीतिकाव्यस्य रचनामकरोत् ?

(ग) संस्कृतभाषा कीदृशी भाषा वर्तते ?

प्रश्न 2. निम्नांकित अनुच्छेदों का हिन्दी में अर्थ लिखो –

पुरा भारते .... भाषां जानाति स्म।

प्रश्न 3. निम्न का अर्थ लिखो –

पुरा, शिरसि, प्रतीयते, रक्षणार्थं

प्रश्न 4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) संस्कृत प्राचीन भाषा है।

(ख) मेघदूत गीतिकाव्य है।

(ग) वाल्मीकि ने रामायण महाकाव्य की रचना की थी।

(घ) संस्कृत भाषा में संस्कृति निहित है।

(ङ) संस्कृत मधुर भाषा है।

PXJQNU

त्रयोदशः पाठः
सत्सङ्गतिः

PXTLQH

सतां सङ्गतिः सत्सङ्गतिः कथ्यते। अस्मिन् संसारे यथा सज्जनाः तथा दुर्जनाः अपि सन्ति। यद्यपि पूर्वजन्मनः गुणदोषौ अपि मनुष्ये जन्मना आगच्छतः। तथापि नहि कोऽपि जनः जन्मतः दुर्जनो वा भवति अपितु मानवे संसर्गस्यापि विशेष रुपेण प्रभावः भवति। यः यादृशेन पुरुषेण सह सङ्गतिं करोति, यादृशेन पुरुषेण सह तिष्ठति, च (उपविशति), खादति, पिबति, आलापसंलापौ च कुरुते, तस्य तादृशः एव स्वभावो भवति। यदि सज्जनैः सह सङ्गतिः भवति, तर्हि नरः सज्जनः भवति। चेत् दुर्जनैः सह सङ्गतिः भवति तर्हि सः दुर्जनः भवति, इति प्रकृतिनियमः। अतएव नीतिकाराः कथयन्ति–

'संसर्गजा दोषगुणाः भवन्ति'।

सत्सङ्गेन मनुष्येषु बहवः गुणाः उद्भवन्ति। सत्सङ्गेन मनुष्यः विवेकवान् श्रद्धावान् शीलवान् परोपकारी भक्तिमान् च भवति। दुर्जनानां सङ्गकरणेन तु दुर्गुणाः एव प्रादुर्भवन्ति। सत्यमेव मानवजीवने सत्सङ्गः उन्नतेः सोपानमस्ति। अतः सर्वदा सत्पुरुषाणाम् एव सङ्गतिः कर्त्तव्या। शास्त्रस्य तु अयं निर्देशः अस्ति यत् विद्यालङ्कृतः अपि दुर्जनः परिहर्तव्यः। यथा–

"दुर्जनः परिहर्तव्यः विद्यालङ्कृतोऽपि सन्।"
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः।।

यद्यपि वर्तमानयुगे सज्जनानाम् अभावः प्रायेण दृष्टिगोचरः भवति तथापि सत्सङ्गस्य महत्वं विज्ञाय आत्मनः कल्याणाय च प्रयत्नेन सत्सङ्गः एव करणीयः। सत्यमेव सत्सङ्गतिविषये उक्तम्–

जाड्यं धियो हरति सि चति वाचि सत्यं
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्।
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।।

एका कथा प्रचलिता एकस्मिन् नीडे द्वौ शुकौ न्यवसताम्। दैववशात् एकः शुकः सन्ताश्रमे अवसत्। द्वितीयः चौरस्य गृहे न्यवसत्। सन्ताश्रमे सन्तस्य सद्विचारेण प्रभावितो भूत्वा प्रथमः शुकः सत्यं वदति स्म। परं द्वितीयः चौरस्य आचरणप्रभावेन मिथ्या वदति स्म। अतः सतां सङ्गतिः श्रेयस्करा भवतीति।

शब्दार्थाः

संसर्गजाः–मिलने या साथ होने से उत्पन्न। बहवः–बहुत (बहुवचन)। प्रादुर्भवन्ति–उत्पन्न होते हैं। यादृशः–जैसा। सोपानम्–सीढ़ी। विद्यालङ्कृतः–विद्या से युक्त शोभयमान। असौ–यह (अदस् पु.) विज्ञाय–जानकर। जाड्यम्–मूर्खता को। धियः–बुद्धि की। दिशति–देती है। अपाकरोति– दूर करती है। प्रसादयति–प्रसन्न करती है। दिक्षु–दिशाओं में। तनोति–फैलाती है। पुंसाम्–मनुष्यों का। एकस्मिन् नीडे–एक घोंसले में । न्यवसताम्–निवास करते थे। अवसत्–रहता था। वदति स्म–बोलता था। श्रेयस्करा–श्रेष्ठ होती है।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रश्न 1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

क. मानवे कस्य प्रभावः भवति ?
ख. सत्सङ्गेन मनुष्यः कीदृशः भवति ?
ग. दुर्जनानां सङ्गेन किं भवति ?
घ. उन्नत्याः सोपानं किम् अस्ति ?
ङ. शास्त्रस्य कः निर्देशः अस्ति ?
च. सत्सङ्गतिः किं करोति ?
छ. सतां सङ्गतिः कीदृशी भवति ?

भावबोधप्रश्नाः–

प्रश्न 2. निम्नलिखित पदों में विभक्ति, वचन एवं लिङ्ग बतायें–

(क) सताम् (ख) संसारे (ग) दुर्जनैः (घ) नीतिकाराः
(ङ) विवेकवान् (च) आत्मनः (छ) अस्मिन् नीडे (ज) सन्ताश्रमे

प्रश्न 3. निम्नलिखित पदों का विग्रह करें और समास का नाम बतायें–

(क) सत्सङ्गतिः (ख) गुणदोषौ
(ग) मानवजीवने (घ) सत्पुरुषाणाम्

बोधविस्ताराः

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

(क) सतां सङ्गतिः...................... कथ्यते।
(ख) सत्सङ्गेन मनुष्येषु .... आयान्ति।
(ग) मानवजीवने सत्सङ्गः............ अस्ति।
(घ) विद्यालङ्कृतः अपि .... परिहर्तव्यः।
(ङ) सतां सङ्गतिः .... भवति।

Q4NA7D

प्रश्न 4 संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) संसार में सज्जन भी हैं।
(ख) मनुष्य पर संसर्ग का प्रभाव पड़ता है।
(ग) वर्तमान युग में सज्जनों का अभाव दिखाई देता है।
(घ) सत्सङ्ग से मनुष्य की उन्नति होती है।
(ङ) सत्सङ्गति श्रेयष्कर होती है।

प्रश्न 5. संधि विच्छेद करते हुए संधि का नाम एवं नियम बताइए–

यद्यपि, मनुष्योपरि, विद्यालङ्कृतः, भवतीति।

प्रश्न 6. हिन्दी में व्याख्या करें–

(क) सतां सङ्गतिः सत्सङ्गतिः कथ्यते।
(ख) सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।
(ग) दिक्षु तनोति कीर्तिम्।
(घ) सत्सङ्गतिः श्रेयस्करा भवतीति।

प्रश्न 7. (क) सत्सङ्गति पर संस्कृत में पाँच वाक्य बनाइए।
(ख) सत्सङ्गति के दो पद्य कण्ठस्थ कीजिए।

❖❖❖

चतुर्दशः पाठः
श्रवणकुमारस्य कथा

Q4X691

पितृभक्तः श्रवणकुमारः एकः बालकः आसीत्। सः सदा पित्रोः सेवां करोति स्म। तस्य पितरौ नेत्रहीनौ आस्ताम्। एकदा तस्य पितरौ अवदताम् – वत्स आवां तीर्थयात्रां कर्तुम् इच्छावः। श्रवणकुमारः पित्रोः आज्ञां परिपालनार्थं एकस्यां वहनिकायां पितरौ स्थापयामास। सः तौ स्कंधे धृत्वा तीर्थयात्रायै प्राचलत्। मार्गे तस्य पितरौ पिपासितौ अभवताम्।

श्रवणकुमारः पिपासितयोः पित्रोः क्षुधाशान्त्यर्थं एकस्य वृक्षस्य छायायां तौ संस्थाप्य जलम् आनेतुं सरयूम् अगच्छत्। सः जलतुम्बिकां नद्याः जले निमज्जितम् अकरोत्। जलस्य भरणावसरे तुम्बिकायाः ''गड़गड़'' इति ध्वनिः अभवत्। तदा आखेटार्थं समागतः राजा दशरथः तं ध्वनिम् अश्रृणोत् अचिन्तयच्च। नूनं कश्चित् गजकलभः जलं पिबति। सः शब्दवेधी बाणं प्राक्षिपत्। बाणः श्रवणस्य हृदयम् अछिनत्।

बाणेन आहतः श्रवणकुमारः चीत्कारशब्दम् अकरोत्। तत् श्रुत्वा दशरथः तं प्रति अधावत्। सः तत्र बाणविद्धं श्रवणं दृष्ट्वा शोकाकुलः अभवत्। बाणविद्धः श्रवणकुमारः दशरथम् अवदत् मम अन्धौ पितरौ पिपासाकुलौ वृक्षस्य अधः तिष्ठतः। त्वं शीघ्रं गत्वा तौ जलं पायय। एवं कथयन् सः प्राणान् अत्यजत्।

शोकाकुलः दशरथः जलतुम्बिकां नीत्वा श्रवणस्य मातापित्रोः समीपम् अगच्छत्। तौ अपृच्छताम् वत्स! विलम्बः कथं जातः ? आवां पिपासापीडितौ त्वम् उत्तरं देहि। दशरथः सर्वां घटनां न्यवेदयत्।

तत् श्रुत्वा तौ वृद्धौ तम् अशपताम्। यथा आवां पुत्रवियोगे प्राणान् त्यजावः तथैव त्वमपि पुत्र–वियोगे प्राणान् त्यक्ष्यसि। एवं विलपन्तौ दिवं गतौ। महाराजो दशरथः अतीव उदासीनो अभवत्। सः श्रवणकुमारस्य तयोः पित्रोश्च दाहसंस्कारं कृत्वा प्रत्यावर्तत्।

शब्दार्थाः

धृत्वा = धारण करके। जलतुम्बिकाम् = पानी की तुम्बी को। बाणं प्राक्षिपत् = बाण चलाया। अछिनत् = बींधा। तूष्णीम् = चुपचाप। अशपताम् = शाप दे दिया। पिपासितो = प्यासे। आनेतुम् = लाने के लिये। गजकलभः = हाथी का बच्चा। पायय = पिला दो। मुहूर्मुहुः = बार–बार। त्यक्ष्यति = तू छोड़ेगा। प्रत्यावर्तत् = लौट गया।

अभ्यासः

प्रश्न 1. संस्कृत में उत्तर दीजिए –

(क) श्रवणकुमारः पितरौ कुत्र उपावेशयत् ?

(ख) श्रवणकुमास्य पितरौ कीदृशौ आस्ताम् ?

(ग) श्रवणकुमारः जलम् आनेतुं कुत्र अगच्छत् ?

(घ) कः बाणेन श्रवणम् अविध्यत् ?

प्रश्न 2. निम्नांकित पदों के अर्थ लिखिए –

पिपासितौ, तूष्णीम्, मुहुर्मुहुः, प्रत्यावर्तत।

प्रश्न 3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) श्रवणकुमार आज्ञाकारी था।

(ख) उसने माता–पिता की आज्ञा का पालन किया।

(ग) उसके माता–पिता प्यासे थे।

(घ) श्रवणकुमार जल लाने सरयू नदी गया।

(ङ) दोनों ने पुत्र वियोग में प्राण छोड़ दिये।

Q572AN

❖❖❖

पञ्चदशः पाठः
पर्यावरणम्

मनुष्यो यत्र निवसति, यत् खादति, यद् वस्त्रं धारयति, यज्जलं पिबति यस्य पवनस्य सेवनं करोति, एतत्सर्वं पर्यावरणम् इति शब्देनाभिधीयते।

अधुना पर्यावरणस्य समस्या न केवलं स्वदेशस्य एव अपितु समस्तविश्वस्य समस्या वर्तते। यज्जलं यश्च वायुः अद्य उपलभ्यते, तत्सर्वं मलिनं दूषितं च दृश्यते। उद्योगशालानां मलिनं जलं नालिकानां माध्यमेन गंगासदृशीं पावनीनदीम् अपि मलिनायते। धूमनलिकाभ्यः निस्सरन् दूषितो धूमराशिः अद्य पवित्रमपि आकाशं दूषयति। समस्तं जलवायुमण्डलं पर्यावरणं विकृतं करोति।

आधुनिकाः वैज्ञानिकाः आणविकाः प्रयोगाः अपि पर्यावरणस्य प्रदूषकं संवर्धयन्ति। गतदिवसेषु ईराकअमेरिकादेशयोः भीषणे युद्धे प्रयुक्तैः आयुधैः समुद्रस्यापि जलं दूषितम्। तैलकूपेष्वपि अग्निः प्रज्वलिता। फलतः प्रत्येकः प्राणी शुद्धं प्राणवायुं प्राप्तुं न शक्नोति। दिवसे दिवसे च स्वास्थ्यं क्षीणं भवति।

अस्माकं पूर्वजाः पर्यावरणस्य शुद्धतायै उपवनानाम् उद्यानानां च आरोपणाय धार्मिकं विधानं यज्ञानाम् अनुष्ठानं च कुर्वन्ति स्म। साम्प्रतं वनानां छेदनेन वृक्षाणाम् अभावो भवति। तेषाम् अभावे अपेक्षिता वृष्टिः न भवति, येन अनावृष्टेः प्रकोपो वर्धते। अनावृष्टिः कृषिकार्यं बाधते। वृक्षाणाम् अभावे शुद्धो वायुरपि न लभ्यते। शुद्धं वायुं विना प्राणिनः अस्वस्थाः रुग्णाश्च जायन्ते।

इत्थं पर्यावरणस्य महत्वं सर्वविदितम् अस्ति। अस्य रक्षायै वयं सर्वथा सचेष्टाः भवेम।

शब्दार्थाः

अपितु = बल्कि। धूमराशिः = धुएं का ढेर। आयुधैः = अस्त्रों–शस्त्रों से। आरोपणाय = लगाने के लिये। रुग्णाश्च = और रोगी (रुग्णाः+च)। अभिधीयते = बनाता है। लभ्यते = प्राप्त होता है। अधुना = इस समय। निवसति = रहता है। धारयति = धारण करता है।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रश्न 1. निम्न प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए –

(क) समस्तजलवायुमण्डलं पर्यावरणं किं करोति ?

(ख) दिवसे–दिवसे किं क्षीणं भवति ?

(ग) वृक्षाणाम् अभावे किं न लभ्यते ?

(घ) कस्य महत्वं सर्वविदितम् अस्ति ?

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(क) एतत् सर्वम् .... इति शब्देनाभिधीयते।

(ख) तेलकूपेष्वपि अग्निः ....।

(ग) .... रक्षायै वयं सर्वथा सचेष्टाः भवेम।

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) पर्यावरण स्वच्छ होना चाहिए।

(ख) वृक्षों से लाभ होता है।

(ग) हमें वृक्षों की रक्षा करनी चाहिए।

(घ) गाँव का पर्यावरण अच्छा था।

प्रश्न 4. (क) निम्नलिखित पदों का सन्धि–विच्छेद कीजिए –

(i) पर्यावरणम् (ii) समुद्रस्यापि (iii) तेलकूपेष्वपि

(ख) निम्नलिखित पदों की संधि कीजिए –

(i) ईराक+अमेरिका (ii) च+आरोपणाय।

Q5PTDY

षोडशः पाठः
नीतिनवनीतानि

Q5YPFL

1. विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
   पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनाद् धर्मः ततः सुखम्।। 1।।

2. नास्ति विद्यासमं चक्षुः नास्ति सत्यसमं तपः।
   नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम्।। 2।।

3. विदेशेषु धनं विद्या व्यसनेषु धनं मतिः।
   परलोके धनं धर्मः शीलं सर्वत्र वै धनम्।। 3।।

4. वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खः शतान्यपि।
   एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति, न च ताराशतैरपि।। 4।।

5. सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
   प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः।। 5।।

6. परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः
   परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकाराय सतां विभूतयः।। 6।।

7. अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
   उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।। 7।।

शब्दार्थाः

ददाति = देता है। विनयात् = विनय से। पात्रताम् = योग्यता। आप्नोति = प्राप्त होता है। ततः = उससे। नास्ति = नहीं है। समम् = समान। विदेशेषु = विदेशों में। व्यसनेषु = व्यसनों में। परलोके = परलोक में। वरम् = श्रेष्ठ। तमः = अंधकार। हन्ति = मारता है। ब्रूयात् = बोलना चाहिये। परोपकाराय = परोपकार के लिये। फलन्ति = फलते हैं। वहन्ति = बहती हैं। अयम् = यह। परोवेति = पराया। वसुधैव कुटुम्बकम् = सम्पूर्ण धरती ही परिवार है।

अभ्यासः

प्रश्न 1. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिये –

(क) विद्या किं ददाति ?

(ख) किं समं सुखं नास्ति ?

(ग) कुत्र धनं धर्मः ?

(घ) कः गुणी पुत्रो अस्ति ?

(ङ) कथं ब्रूयात् ?

(च) कस्मै वृक्षाः फलन्ति ?

(छ) केषां तु वसुधैव कुटुम्बकं भवति ?

प्रश्न 2. निम्न रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) नास्ति सत्यं .... तपः।

(ख) .... धनं विद्या।

(ग) न च .... शतान्यपि।

(घ) .... ब्रूयात् .... ब्रूयात्।

(ङ) उदारचरितानां तु ....।

प्रश्न 3. उचित संबंध जोड़ो –

(क) वसुधैव कुटुम्बकम्	–	तपः
(ख) दुहन्ति	–	विनयम्
(ग) गुणीपुत्रो	–	गावः
(घ) विद्या	–	वरम्
(ङ) सत्यं	–	उदारचरितानाम्

प्रश्न 4. "विद्या" आकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग की कारक रचना लिखिए।

प्रश्न 5. 'प्राप्' शब्द का लट् लकार एवं लृट् लकार परस्मैपद में रूप चलाइए।

❖ ❖ ❖

Q68KH9

सप्तदशः पाठः
महात्मागाँधी

महात्मागाँधी एकः महापुरुषः आसीत्। सः भारताय अजीवत्। भारताय एव च प्राणान् अत्यजत्। अस्य पूर्णं नाम मोहनदासकर्मचन्द–गाँधी अस्ति।

अस्य जन्म १८६९ तमे ख्रीस्ताब्दे अक्टूबर– मासस्य द्वितीयायां तिथौ 'पोरबन्दर' नाम्नि स्थाने अभवत्। तस्य पितुः नाम कर्मचन्दगाँधी मातुश्च पुतलीबाई आसीत्। तस्य पत्नी कस्तूरबा धार्मिका पतिव्रतानारी आसीत्।

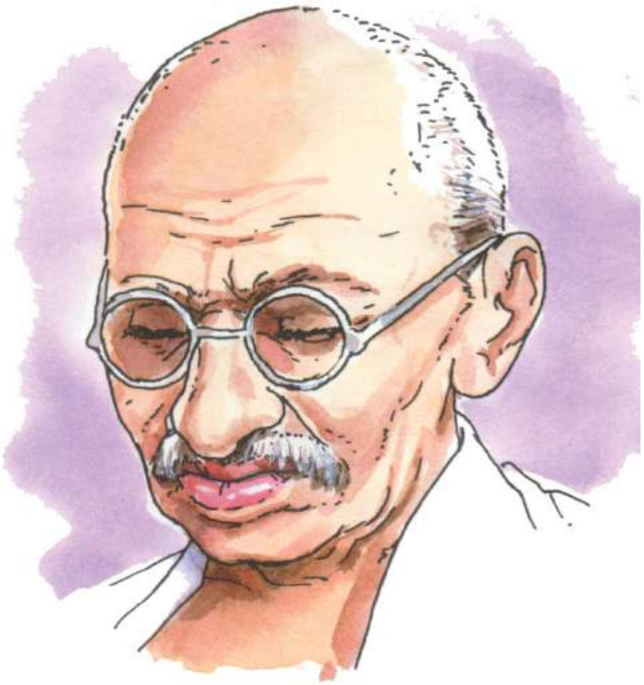

बाल्यकालादेव गाँधी एकः सरलः बालकः आसीत्। सः सदा सत्यं वदति स्म। सः आचार्याणां प्रियः आसीत्।उच्चशिक्षायै सः आंग्लदेशमगच्छत्। विदेशगमनसमये मातुः आज्ञायाः सः संकल्पितवान् यत् अहं मद्यं न सेविष्ये, मांसस्पर्शमपि न करिष्यामि एवं सदा ब्रह्मचर्यम् आचरिष्यामि। स्वदेशमागत्य सः देशस्य सेवायाम् संलग्नः अभवत्। अस्य ईश्वरे दृढः विश्वासः आसीत्। सः आङ्ग्लशासकानां विरोधे सत्याग्रहान्दोलनम् प्रावर्तयत्। तस्य श्रद्धा अहिंसायाम् आसीत्। तस्य सर्वः समयः, सर्वा शक्तिः, सर्वम् धनम् च देशाय एवासीत्।

सः देशभक्तानां नायकः आसीत्। सः भारतस्य स्वातंत्र्यार्थम् (स्वतंत्रतायै) आन्दोलनम् प्रारभत्। "आङ्ग्लीयाः! भारतं त्यजत, इति तस्य घोषवाक्यम् आसीत्।" अस्य महापुरुषस्य प्रयत्नैः भारतं स्वतन्त्रम् अभवत्।

शब्दार्थाः

अजीवत् = जीए। ख्रीस्ताब्दे = ईस्वी सन् में। अभवत् = हुआ। श्रद्धा = विश्वास। देशभक्तानां=देशभक्तों के। आङ्ग्लीयाः! भारतं त्यजत = अंग्रेजों! भारत छोड़ो। प्रावर्तयत् = चलाया। अहिंसायाम् = अहिंसा में।

अभ्यासः

प्रश्न 1. निम्न प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) महात्मा गाँधिनः पूर्णं नाम किमस्ति ?

(ख) तस्य मातुः नाम लिखतु ?

(ग) तस्य जन्म कस्मिन् स्थाने अभवत् ?

(घ) महात्मा गाँधी उच्चशिक्षायै कुत्र अगच्छत्?

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(क) सः .... प्रियः आसीत्।

(ख) .... सदा सत्यं वदति स्म।

(ग) कर्मचन्द गाँधी तस्य .... नाम।

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) वह सदा सत्य बोलता था।

(ख) महात्मा गाँधी एक महापुरुष थे।

(ग) उसकी श्रद्धा अहिंसा में थी।

प्रश्न 4.

क – निम्नलिखित पदों में सन्धि–विच्छेद कीजिए –

(i) स्वदेशमागत्य (ii) मातुश्च।

ख – निम्नलिखित पदों की सन्धि कीजिए –

(i) देशम्+अगच्छत् (ii) स्वातंत्र्य+अर्थम्।

Q6RCKJ

अष्टादशः पाठः
होलिकोत्सवः

QGTDJH

छत्तीसगढप्रदेशस्य प्रियः उत्सवः होलिकोत्सवः अस्ति। जनाः उत्सवं श्रुत्वैव आनन्दम् अनुभवन्ति। छत्तीसगढप्रदेशस्य जनानाम् इमम् उत्सवं प्रति अतिनिष्ठा लक्ष्यते। अस्माकं प्रदेशे अनेके उत्सवाः समायोज्यन्ते। परं होलिकोत्सवस्य वैशिष्ट्यम् अनुपमेयमस्ति।

होलिकोत्सवः फाल्गुनमासस्य पूर्णिमायां सम्पद्यते। अस्योत्सवस्य आगमनं समशीतोष्णऋतुकाले भवति। वसन्तागमनेन सर्वासु दिशासु शस्यानि आच्छादितानि भवन्ति। उद्यानेषु नवपुष्पाणि विकसन्ति। मयूराः नृत्यन्ति, पिकाः गायन्ति च। अस्मिन्–समये सर्वेषां प्राणीनां हृदि प्रफुल्लता सञ्चरति।

छत्तीसगढम् कृषिप्राधान्यप्रदेशः अस्ति। अधिकाधिकजनानां जीवनं कृषौ एव अवलम्बितम्। कृषकाः षण्मासपर्यन्तं कृषिकार्यं बहुयत्नेन कुर्वन्ति। पश्चात् धनधान्यं सम्प्राप्य हर्षमनुभवन्ति।

प्राचीनकाले सर्वे गृहस्थाः यज्ञं विदधति स्म। ते यज्ञसम्पादनार्थं यथेष्टं समिधानि नवान्नानि घृतानि दुग्धानि तथा अन्यानि द्रव्याणि च प्रयच्छन्ति स्म। अद्यापि सैव प्रथा भिन्नतया दृश्यते। यज्ञस्य प्राचीनरुपं विलुप्तमस्ति। अधुना बालकाः इतस्ततः काष्ठानि एकत्रीकुर्वन्ति–दहन्ति च। अस्मिन्नवसरे जनाः बहुरङ्गरञ्जितजलं परस्परं क्षिपन्ति खेलन्ति च विविधैः रागैः। आबालवृद्धाः प्रसन्नाः परस्परं मिलन्ति। सर्वे गायन्ति नृत्यन्ति च। सर्वे स्नेहेन अन्येषां मुखेषु गुलालं मर्दयन्ति।

फागगानमाध्यमेन जनाः स्वसुखानि प्रदर्शयन्ति। यथा ते आनन्दार्णवे निमग्नाः इति प्रतीयते। गृहेषु बहूनि मिष्ठान्नानि निर्मितानि भवन्ति। एका कथा प्रचलिता – होलिका प्रह्लादस्य "पितृस्वसा" आसीत्। सा प्रह्लादेन सह अग्नौ प्रविष्टा। विष्णोः प्रसादेन प्रह्लादः न दग्धः। होलिकैव दग्धा। अस्यां कथायां असत्योपरि सत्यस्य विजयः भवतीति संदेशः।

उत्सवोऽयम् स्वस्थं पर्यावरणं सृजति। परस्परं सौहार्द्रभावम् संवर्धयति च। एवं आनन्दस्य उल्लासस्य च अयमुत्सवः सर्वेषां मनांसि रञ्जयतीति।

शब्दार्थाः

श्रुत्वैव = (श्रुत्वा+एव) सुनकर। अनुभवन्ति = अनुभव करते हैं। इमम् उत्सवं प्रति = इस उत्सव के लिए। समायोज्यन्ते = आयोजित करते हैं। अनुपमेयम् = जिसकी उपमा (तुलना) न हो। प्रफुल्लता = प्रसन्नता। अवलम्बितम् = आश्रित। हर्षमनुभवन्ति = हर्ष (आनन्द) का अनुभव करते हैं। यज्ञं विदधति स्म = यज्ञ करते थे। प्रयच्छन्ति स्म = याचना करते थे। इतस्ततः = इधर – उधर। काष्ठानि = लकड़ियों को। एकत्रीकुर्वन्ति = एकत्र करते हैं। आबालवृद्धाः = बच्चे वृद्ध सभी। क्षिपन्ति = फेंकते हैं। (प्र.पु. या अ.पु.बहुव.) आनन्दार्णवे = आनन्द के सागर में। (सप्तमी एक वचन) पितृस्वसा = फूफी (पिता की बहन)। प्रसादेन = कृपा से (तृतीया विभक्ति एक वचन)। सौहार्द्रभावम् = मित्रभाव। संवर्धयति = बढ़ाता है। सृजति = निर्माण करता है। रञ्जयति = प्रसन्न होता है (प्र.पु. या अन्य पु.एक वचन)।

अभ्यासप्रश्नाः

प्रश्न 1. संस्कृत में उत्तर दीजिए –

Q718H7

(क) कस्मिन् मासे होलिकोत्सवः भवति ?

(ख) वसन्तागमनेन सर्वासु दिशासु कानि आच्छादितानि भवन्ति ?

(ग) प्रह्लादस्य पितृस्वस्रुः किं नाम अस्ति ?

(घ) होलिकोत्सवः किं सदेशं प्रेषयति ?

प्रश्न 2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

(क) होलिकोत्सवः .... मासे .... तिथौ भवति।

(ख) मयूराः .... पिकाः .... च।

(ग) .... प्रसादेन .... न दग्धः।

(घ) असत्योपरि .... विजयः भवति।

प्रश्न 3. "पितृस्वसा" शब्द के रुप सभी विभक्तियों में लिखिए ।

एकोनविंशति पाठः
सूक्तयः

Q739LA

(1) सुखस्य मूलं धर्मः।

अर्थ – धर्म सुख का मूल (जड़) है।

(2) दया धर्मस्य जन्मभूमिः।

अर्थ – दया धर्म की जन्मभूमि (जन्मस्थान) है।

(3) मूर्खेषु विवादः न कर्तव्यः।

अर्थ – मूर्खों के साथ विवाद नहीं करना चाहिए।

(4) परद्रव्यं न हर्तव्यम्।

अर्थ – दूसरों के धन का हरण नहीं करना चाहिए।

(5) नास्ति सत्यात् परं तपः।

अर्थ – सत्य से बढ़कर दूसरा कोई तप (तपस्या) नहीं है।

(6) सत्यं स्वर्गस्य साधनम्।

अर्थ – सत्य ही स्वर्ग प्राप्ति का साधन है।

(7) यशः शरीरं न विनश्यति।

अर्थ – यश (कीर्ति) रूपी शरीर कभी नष्ट नहीं होता (अर्थात् शरीर के नष्ट होने पर भी कीर्ति कभी नष्ट नहीं होती)।

(8) न दिवा स्वप्नं कुर्यात्।

अर्थ – दिवा (दिन) में स्वप्न नहीं देखना चाहिए अर्थात् (केवल कल्पना लोक में भ्रमण नहीं करना चाहिए)।

(9) नास्त्यहंकारसमः शत्रुः।

अर्थ – अहंकार के समान दूसरा कोई शत्रु नहीं है।

(10) न संसारभयं ज्ञानवताम्।

अर्थ – ज्ञानियों के लिए कोई सांसारिक भय नहीं है।

शब्दार्थाः

सुखस्य = सुख का। मूलम् = जड़। धर्मस्य = धर्म का। जन्मभूमिः = जन्म स्थान। हर्तव्यम् = हरण करना (चुराना)। तपः = तपस्या। स्वर्गस्य = स्वर्ग का। विनश्यति = नष्ट होता है। कुर्यात् = करना चाहिए। ज्ञानवताम् = ज्ञानियों के लिए। अहंकारसमः = अहंकार के समान।

अभ्यासः

प्रश्न 1. निम्नलिखित रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

(क) सत्यं .... साधनम्।

(ख) दया .... जन्मभूमिः।

(ग) मूर्खेषु .... कर्त्तव्यः।

(घ) यशः .... विनश्यति।

प्रश्न 2. हिन्दी में अर्थ लिखिए –

(क) परद्रव्यं न हर्तव्यम्।

(ख) न संसारभयं ज्ञानवताम्।

(ग) नास्ति सत्यात् परं तपः।

(घ) सुखस्य मूलं धर्मः।

Q7A4NU

प्रश्न 3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) दया धर्म है।

(ख) सत्य के समान कोई तप नहीं है।

(ग) सत्य ही स्वर्ग है।

(घ) अहंकार के समान शत्रु नहीं है।

(ङ) ज्ञानी को भय नहीं होता।

प्रश्न 4. "विनश्" धातु का लट्लकार एवं लृट्लकार परस्मैपद में चलाइए।

परिशिष्टव्याकरणम्

इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द रवि = सूर्य

जिन शब्दों के अन्त में 'इ' की ध्वनि आती है वे शब्द इकारान्त शब्द कहलाते हैं। जैसे– रवि, पति, हरि, गिरि विधि तथा नीचे अर्थ सहित लिखे शब्दों के रूप रवि के समान चलेंगे।

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
कर्ता (प्रथमा)	रविः	रवी	रवयः
कर्म (द्वितीया)	रविम्	रवी	रवीन्
करण (तृतीया)	रविणा	रविभ्याम्	रविभिः
सम्प्रदान (चतुर्थी)	रवये	रविभ्याम्	रविभ्यः
अपादान (पञ्चमी)	रवेः	रविभ्याम्	रविभ्यः
सम्बन्ध (षष्ठी)	रवेः	रव्योः	रवीणाम्
अधिकरण (सप्तमी)	रवौ	रव्योः	रविषु
सम्बोधन	हे रवे!	हे रवी!	हे रवयः!

अग्नि = आग	विधि = भाग्य, विधाता
अतिथि = मेहमान	गिरि = पहाड़
हरि = विष्णु, बन्दर, शेर	व्याधि = बीमारी
मुनि, ऋषि = तपस्वी	उदधि, वारिधि = समुद्र
कपि = बन्दर	अरि = शत्रु
नृपति = राजा	कवि = पद्यरचयिता

Q7C5HX

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'जननी' शब्द (जन्मदात्री माँ)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	जननी	जनन्यौ	जनन्यः
द्वितीया	जननीम्	जनन्यौ	जननीः
तृतीया	जनन्या	जननीभ्याम्	जननीभिः
चतुर्थी	जनन्यै	जननीभ्याम्	जननीभ्यः
पञ्चमी	जनन्याः	जननीभ्याम्	जननीभ्यः
षष्ठी	जनन्याः	जनन्योः	जननीनाम्

सप्तमी	जनन्याम्	जनन्योः	जननीषु
सम्बोधन	(हे) जननि	(हे) जनन्यौ	(हे) जनन्यः

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'जननी' की तरह चलेंगे –

वाणी, गौरी, नारी, भवती, सखी, पत्नी, राज्ञी, नगरी, सहचरी, मार्जनी, विदुषी आदि।

स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त शब्द 'स्त्री' (नारी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
प चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः

उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द ' भानु ' (सूर्य)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
प चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो	हे भानू	हे भानवः

निम्नलिखित शब्दों के रूप 'भानु' के समान चलते हैं –

साधु, गुरु, विष्णु, प्रभु, शिशु, विधु (चन्द्र), पशु, शम्भु, वेणु (बाँस), भृगु, शत्रु, रिपु (शत्रु), उरु (जाँघ), जन्तु, मृत्यु, ऋतु, हेतु (कारण), तरु (वृक्ष) आदि।

उकारान्त 'मधु' (शहद) शब्द नपुंसकलिङ्ग

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
प चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु, मधो	हे मधुनी	हे मधूनि

दारु (काठ), जानु (घुटना), तालु, वस्तु आदि शब्दों के रूप ''मधु'' के समान चलेंगे।

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग 'वारि ' (पानी) शब्द

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
प चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि	हे वारिणी	हे वारीणि

सभी इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप (अक्षि, अस्थि, दधि, सक्थि को छोड़कर) 'वारि' के भाँति चलते हैं।

सर्वनाम् ''एतद्'' (यह) पुल्लिङ्ग शब्द

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
कर्ता	एषः	एतौ	एते
कर्म	एतम्, एनम्	एतौ, एनौ	एतान्, एनान्
करण	एतेन, एनेन	एताभ्याम्	एतैः
सम्प्रदान	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
अपादान	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः

सम्बन्ध	एतस्य	एतयोः, एनयोः	एतेषाम्
अधिकरण	एतस्मिन्	एतयोः, एनयोः	एतेषु

सर्वनाम् ''एतद्'' स्त्रीलिङ्ग शब्द

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
कर्ता	एषा	एते	एताः
कर्म	एताम्, एनाम्	एते, एने	एताः, एनाः
करण	एतया, एनया	एताभ्याम्	एताभिः
सम्प्रदान	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
अपादान	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
सम्बन्ध	एतस्याः	एतयोः, एनयोः	एतासाम्
अधिकरण	एतस्याम्	एतयोः, एनयोः	एतासु

सर्वनाम् ''एतद्'' नपुंसकलिङ्ग शब्द

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
कर्ता	एतत्	एते	एतानि
कर्म	एतत्, एनत्	एते, एने	एतानि, एनानि
करण	एतेन, एनेन	एताभ्याम्	एतैः
सम्प्रदान	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
अपादान	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
सम्बन्ध	एतस्य	एतयोः, एनयोः	एतेषाम्
अधिकरण	एतस्मिन्	एतयोः, एनयोः	एतेषु

सर्वनाम् ''यद्'' (जो) पुल्लिङ्ग शब्द

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
कर्ता	यः	यौ	ये
कर्म	यम्	यौ	यान्
करण	येन	याभ्याम्	यैः
सम्प्रदान	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
अपादान	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
सम्बन्ध	यस्य	ययोः	येषाम्

अधिकरण	यस्मिन्	ययोः	येषु

सर्वनाम् ''यद्'' स्त्रीलिङ्ग शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता	या	ये	याः
कर्म	याम्	ये	याः
करण	यया	याभ्याम्	याभिः
सम्प्रदान	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
अपादान	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
सम्बन्ध	यस्याः	ययोः	यासाम्
अधिकरण	यस्याम्	ययोः	यासु

सर्वनाम् ''यद्'' नपुंसकलिङ्ग शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता	यत्	ये	यानि
कर्म	यत्	ये	यानि
करण	येन	याभ्याम्	यैः
सम्प्रदान	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
अपादान	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
सम्बन्ध	यस्य	ययोः	येषाम्
अधिकरण	यस्मिन्	ययोः	येषु

विशेषण – संख्यावाची (11 से 20 तक)

एकादशः	–	ग्यारह	(11)
द्वादशः	–	बारह	(12)
त्रयोदशः	–	तेरह	(13)
चतुर्दशः	–	चौदह	(14)
प चदशः	–	पन्द्रह	(15)
षोडशः	–	सोलह	(16)
सप्तदशः	–	सत्रह	(17)
अष्टादशः	–	अट्ठारह	(18)
नवदशः, एकोनविंशतिः, उनविंशतिः	–	उन्नीस	(19)
विंशतिः	–	बीस	(20)

–: कारकों का विशिष्ट परिचय :–

पिछली कक्षा में हमने कारकों का सामान्य परिचय प्राप्त कर लिया है कि कारक, से प्रायः संज्ञा और सर्वनाम युक्त होते हैं और क्रियाओं से संबद्ध होते हैं। कारकों (कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध व अधिकरण) के सामान्य प्रयोग के बाद करण कारक (तृतीया विभक्ति) व सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति) के विशिष्ट प्रयोग को ज्ञात करेंगे।

तृतीया विभक्ति (करण कारक)

क्रिया को करने में कर्ता जिस साधन की अधिक सहायता लेता है उसे करण कारक कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– सः कलमेन पत्रं लिखति (वह कलम से लिखता है।)

1. सह, साकम्, समम्, सार्धम् तथा समानार्थक अव्ययों के साथ (जिनके साथ कोई क्रिया की जाए) उसमें तृतीया विभक्ति होती है।

   जैसे – बालकः पित्रा सह गच्छति।
   (बालक पिता के साथ जाता है।)

2. विकृत अङ्ग वाचक शब्द में जिसमें विकृति बतलाई जाए उसमें तृतीया विभक्ति लगती है।

   जैसे – नेत्रेण काणः। (आँख से काना)
   कर्णेन बधिर। (कान से बहरा)

3. हेतु या कारण के अर्थ में तृतीया विभक्ति लगती है।

   जैसे – नरः सभायां विद्यया शोभते।
   (मनुष्य सभा में विद्या के कारण शोभित होता है।)

4. पृथक (अलग), बिना, नाना आदि शब्दों के साथ द्वितीया, तृतीया अथवा प चमी विभक्ति हो सकती है।

   जैसे – जलं, जलेन, जलाद् बिना मत्स्याः स्थातुं न शक्नुवन्ति।
   (पानी के बिना मछलियाँ जिन्दा नहीं रह सकती।)

चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

जब कोई कार्य किसी के लिए किया जाए अथवा जिसके लिए किया जाए उसे सम्प्रदान कारक कहा जाता है। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है।

जैसे – सः, संदेशाय पत्रं लिखति।
(वह संदेश के लिए पत्र लिखता है।)

1. 'दा' धातु के योग में (जिसे कोई वस्तु दिया जाए) चतुर्थी विभक्ति होती है।

   जैसे – स: ब्राह्मणाय धनं ददाति।
   (वह ब्राह्मण को धन देता है।)

2. 'रुच्' धातु के योग में (जिसको रुचता हो), 'क्रुध्', द्रुह्, असूय् आदि धातुओं के योग में (जिससे क्रोध, द्रोह और ईर्ष्या किया जाए) चतुर्थी विभक्ति होती है।

   जैसे – 1. गणेशाय मोदकं रोचते।
   (गणेश को लड्डू अच्छा लगता है।)

   2. मह्यम् आम्रं रोचते।
   (मुझे आम अच्छा लगता है।)

   3. पिता पुत्राय क्रुध्यति।
   (पिता पुत्र पर क्रोध करता है।)

   4. असन्तुष्ट: धनिकाय ईर्ष्यति।
   (असन्तुष्ट धनवान से जलता है।)

   5. दुर्जन: सज्जनेभ्य: असूयन्ति।
   (दुष्ट सज्जनों से द्वेष करते हैं।)

3. नम:, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी होती है अर्थात् जिसको नमस्कार किया जाए, जिसकी कल्याण की कामना की जाए, जिसके लिए आहूति दी जाए या जिसके लिए किसी को पर्याप्त बताया जाए उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

   जैसे – 1. गणेशाय नम:। (गणेशजी को नमस्कार है।)

   2. जनेभ्य: स्वस्ति। (मनुष्यों का कल्याण हो।)

   3. अग्नये स्वाहा। (यह आहूति अग्नि के लिए है।)

   4. गजेभ्य: पत्राणि अलम्। (हाथियों के लिए पत्ते पर्याप्त हैं।)

क्रिया–धातुरुप लोट्लकार (परस्मैपद)

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अतु	अताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष	अ	अतम्	अत
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम

लोट्लकार चर् चलना (परस्मैपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चरतु	चरताम्	चरन्तु
मध्यम पुरुष	चर	चरतम्	चरत
उत्तम पुरुष	चराणि	चराव	चराम

◆ **निम्नलिखित धातुओं के रूप चर् की तरह चलते हैं :–**

वस्	– (वसति) रहना।	नृत्	– (नृत्यति) नाचना।
रक्ष्	– (रक्षति) रक्षा करना।	कथ्	– (कथयति) कहना।
हृ (हर्)	– (हरति) ले जाना, चुराना।	कुप्	– (कुप्यति) क्रोधित होना।
नी (नय्)	– (नयति) ले जाना।	पा (पिब्)	– (पिबति) पीना।
दा (यच्छ्)	– (ददाति) देना।	वद्	– (वदति) कहना।

लोट्लकार आत्मनेपद – धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय :–

लोट्लकार (आज्ञार्थक) (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अताम्	एताम्	अन्ताम्
मध्यम पुरुष	अस्व	एथाम्	अध्वम्
उत्तम पुरुष	ऐ	आवहै	आमहै

लोट्लकार "रम्" रमण करना (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रमताम्	रमेताम्	रमन्ताम्
मध्यम पुरुष	रमस्व	रमेथाम्	रमध्वम्
उत्तम पुरुष	रमै	रमावहै	रमामहै

◆ **निम्नलिखित धातुओं के रूप "रम्" धातु की तरह चलते हैं :–**

वन्द्	– (वन्दते) प्रणाम करना।	याच्	– (याचते) माँगना।
लभ्	– (लभते) पाना।	रुच्	– (रोचते) अच्छा लगना।

विधिलिङ् परस्मैपद :– धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय
विधिलिङ् (कर्त्तव्य बोधक) (परस्मैपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एत्	एताम्	एयुः
मध्यम पुरुष	एः	एतम्	एत
उत्तम पुरुष	एयम्	एव	एम

विधिलिङ् ''चर्'' चलना (परस्मैपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चरेत्	चरेताम्	चरेयुः
मध्यम पुरुष	चरेः	चरेतम्	चरेत
उत्तम पुरुष	चरेयम्	चरेव	चरेम

विधिलिङ् आत्मनेपद :- धातु के अन्त में लगने वाले प्रत्यय :-
विधिलिङ् (कर्त्तव्य बोधक) (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	एत	एयाताम्	एरन्
मध्यम पुरुष	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
उत्तम पुरुष	एय	एवहि	एमहि

विधिलिङ् ''रम्'' रमण करना (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रमेत	रमेयाताम्	रमेरन्
मध्यम पुरुष	रमेथाः	रमेयाथाम्	रमेध्वम्
उत्तम पुरुष	रमेय	रमेवहि	रमेमहि

सन्धि

सन्धि की परिभाषा :– दो वर्णों के संयोग (मेल) से होने वाले परिवर्तन को सन्धि कहते हैं।

यथा – विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

उक्त सन्धि में विद्या का अंतिम वर्ण 'आ' तथा अर्थी शब्द का आरम्भिक वर्ण 'अ' के बीच सन्धि हुई और आ + अ = आ रूप बना।

सन्धि के प्रकार :– संस्कृत भाषा में सन्धि के तीन प्रकार हैं – (1) स्वर सन्धि,(2) व्यञ्जनसन्धि (3) विसर्ग सन्धि।

स्वर सन्धि के प्रकार :– स्वर सन्धि के छः प्रकार हैं – यथा – दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि और पूर्वरूप है। स्वर सन्धि में दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्, अयादि एवं पूर्वरूप स्वर सन्धि के बारे में पढ़ेंगे।

1. दीर्घ स्वर सन्धि – अ, इ, उ के आगे क्रमशः अ, इ, उ के होने पर दोनों के स्थान में दीर्घ हो जाता है।

उदाहरण –	विद्या	+	आलयः	=	विद्यालयः
	शिव	+	आलयः	=	शिवालयः
	विद्या	+	अर्थी	=	विद्यार्थी
	हिम	+	आलयः	=	हिमालयः
	रवि	+	इन्द्रः	=	रवीन्द्रः
	परि	+	ईक्षा	=	परीक्षा
	भानु	+	उदयः	=	भानूदयः

Q7IZQH

2. गुण स्वर सन्धि :– ए, ओ तथा अर् को गुण कहते हैं। अ के आगे इ, उ और ऋ होने पर उसके स्थान में क्रमशः ए, ओ और अर् हो जाता है।

उदाहरण –	उप	+	इन्द्रः	=	उपेन्द्रः
	नर	+	ईशः	=	नरेशः
	ईश्वर	+	उपासना	=	ईश्वरोपासना
	सप्त	+	ऋषिः	=	सप्तर्षिः
	गण	+	ईशः	=	गणेशः
	महा	+	उत्सवः	=	महोत्सवः
	महा	+	इन्द्रः	=	महेन्द्रः

3. वृद्धि स्वर सन्धि :– 'अ' या 'आ' के आगे 'ए' या 'ऐ' होने पर सन्धि–रूप 'ऐ' होता है तथा 'अ' या 'आ' के आगे 'ओ' या 'औ' होने पर सन्धि–रूप 'औ' होता है।

जैसे :–	तत्र	+	एव	=	तत्रैव
	सदा	+	एव	=	सदैव

मत	+	ऐक्यम्	=	मतैक्यम्
महा	+	ऐश्वर्यम्	=	महैश्वर्यम्
वन	+	औषधिः	=	वनौषधिः
शील	+	औचित्यम्	=	शीलौचित्यम्
महा	+	औदार्यम्	=	महौदार्यम्

4. यण् स्वर सन्धि :–

(i) 'इ' या 'ई' के आगे कोई भिन्न स्वर आए तो इनके स्थान पर 'य्'
(ii) 'उ' या 'ऊ' के आगे कोई भिन्न स्वर आए तो इनके स्थान पर 'व्'
(iii) ऋ के आगे कोई भिन्न स्वर आए तो उसके स्थान पर 'र्' सन्धि रूप होते हैं।

जैसे :–	यदि	+	अपि	=	यद्यपि
	नदी	+	आसीत्	=	नद्यासीत्
	अनु	+	अयः	=	अन्वयः
	वधू	+	आसनम्	=	वध्वासनम्
	पितृ	+	आज्ञा	=	पित्राज्ञा

5. अयादि स्वर सन्धि :– 'ए' के आगे कोई स्वर आए तो 'अय्', 'ऐ' के बाद कोई स्वर आए तो 'आय्', 'ओ' के आगे कोई स्वर आए तो 'अव्' तथा औ के आगे कोई स्वर आए तो "आव्" हो जाता है।

जैसे :–	शे	+	अनम्	=	शयनम्
	नै	+	अकः	=	नायकः
	गो	+	एषणा	=	गवेषणा
	पौ	+	अकः	=	पावकः

6. पूर्वरूप सन्धि :– पद के अन्त में 'ए' या 'ओ' के आगे ह्रस्व (छोटा) 'अ' आने पर 'अ' का पूर्णस्वर में विलय हो जाता है और 'अ' के स्थान पर 'ऽ' (अवग्रह) का चिह्न लगा दिया जाता है।

जैसे :–	जले	+	अस्मिन्	=	जलेऽस्मिन्
	हरे	+	अत्र	=	हरेऽत्र
	वृक्षे	+	अपि	=	वृक्षेऽपि
	वृक्षे	+	अत्र	=	वृक्षेऽत्र

ध्यान देवें :– "सुबन्तं तिङ्न्तं च पद संज्ञं स्यात्" सुबन्त और तिङ्न्त की पद संज्ञा होती है अर्थात् कारक रचना और क्रियारूप से बने शब्दों को 'पद' कहा जाता है।

समास

समास की परिभाषा :— दो या दो से अधिक पदों को मिलाने या जोड़ने को समास कहते हैं। समास का अर्थ है संक्षेप 'समसनं' इति समासः। समास में आए पदों का अर्थ स्वतंत्र होता है किन्तु जब समास बन जाता है तब इसका एक सामूहिक अर्थ होता है। समास करने पर समास में जुड़े हुए पदों के बीच विभक्ति नहीं रहती बल्कि अन्त में विभक्ति लगती है।

समास से जुड़े हुए पद को सामासिक पद कहते हैं। सामासिक पद को विलग करने को विग्रह कहते हैं।

जैसे :— 'राष्ट्रपतिः' इस सामासिक पद का विग्रह 'राष्ट्रस्य पति' होगा।

समास के प्रकार :— समास के छः प्रकार होते हैं – (1) तत्पुरुष, (2) द्विगु, (3) द्वन्द, (4) कर्मधारय, (5) बहुब्रीहि तथा (6) अव्ययी भाव।

1. **तत्पुरुष समास** :— तत्पुरुष समास में प्रथम पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है अर्थात् प्रथम पद, दूसरे पद की विशेषता बताता है। इस समास का विग्रह करने पर प्रथम पद में द्वितीया से सप्तमी तक विभक्तियाँ लगती है।

जैसे :—	दीनदानम्	–	दीनाय दानम्
	चौरभयम्	–	चौरात् भयम्
	परोपकारः	–	परेषां उपकारः
	ग्राम सेवकः	–	ग्रामस्य सेवकः
	सभापण्डितः	–	सभायां पण्डितः

2. **द्विगु समास** :— संख्यावाचक शब्द पहले रहने पर तत्पुरुष समास की द्विगु संज्ञा होती है। (संख्यापूर्वो द्विगुः) द्विगु समास तीन प्रयोजनों से किए जाते हैं – (1) समाहार (समूह) बताने के लिए, (2) उत्तरपद संयोजन के लिए, (3) तद्धित प्रत्यय जोड़ने के लिए।

जैसे :—	नवरत्नम्	–	नवानां रत्नानां समाहारः
	पञ्चवटी	–	पञ्चानां वटानां समाहारः
	त्रिपथम्	–	त्रयाणां पथानां समाहारः

3. **द्वन्द्व समास** :— इस समास में दो या दो से अधिक पद समान अधिकरण के होते हैं जो आपस में 'च' से जुड़े होते हैं। (उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः)

इतरेतरद्वन्द्व – के सभी पद समान रूप से महत्वपूर्ण एवं स्वतंत्र होते हैं। समस्त पद की संख्या के अनुसार वचन तथा अन्तिम पद के लिङ्ग के अनुसार लिङ्ग होता है।

समाहार द्वन्द्व में समस्त पद मिलकर नए अर्थ देते हैं। समस्त पद नपुंसकलिङ्ग एक वचन होता है।

एक शेष द्वन्द्व में समस्त पद होने पर उसमें से एक (प्रथम पद) लुप्त हो जाता है।

जैसे :–	रामलक्ष्मणौ	–	रामः च लक्ष्मणः च
	कृष्णार्जुनौ	–	कृष्णः च अर्जुनः च
	रामलक्ष्मणसीताः	–	रामः च लक्ष्मणः च सीता च
	दधिपयसी	–	दधि च पयश्च
	पाणिपादौ	–	पाणी च पादौ च
	रथिकाश्वारोहम्	–	रथिकाश्च अश्वारोहाश्च
	आसनपाद्यम्	–	आसनं च पाद्यं च
	पितरौ	–	माता च पिता च

4. **कर्मधारय समास** :– इस समास में पूर्वपद विशेषण होता है और जिसके दोनों पद विग्रह करके कर्ता कारक में ही रखे जा सकते हैं। कभी–कभी कर्मधारय के दोनों की पद संज्ञा या दोनों ही पद विशेषण होते हैं। कभी–कभी पूर्वपद संज्ञा और उत्तर पद विशेषण होता है।

जैसे :–	पीतवस्त्रम्	–	पीतं च तत् वस्त्रम्
	नीलकमलम्	–	नीलं च तत् कमलम्
	कृष्णसर्पः	–	कृष्णः च असौ सर्पः
	घनश्यामः	–	घनः इव श्यामः
	मुखकमलम्	–	मुखं कमलम् इव

5. **बहुब्रीहि समास** :– इस समास में पूर्वपद और उत्तर पद के अर्थ मिलकर किसी अन्य पदार्थ की विशेषता प्रकट करते हैं जो पूरे पद में विद्यमान नहीं होता।

जैसे :–	पीताम्बरः	–	पीतम् अम्बरम् यस्य सः (विष्णुः)
	दशाननः	–	दश आननानि यस्य सः (रावणः)
	वीणापाणिः	–	वीणा पाणौ यस्याः सा (सरस्वती)
	मृगनयना	–	मृगस्य नयने इव नयने यस्याः (सुन्दरी)

6. **अव्ययीभाव समास** :– यह समास दो पदों का बनता है जिसका पहला पद अलग तथा दूसरा पद संज्ञा होता है। पूरा पद नपुंसकलिङ, कर्ता कारक, एक वचन, के रूप में बन जाता है पर उसके रुप नहीं चलते।

जैसे :–	उपशालम्	–	शालायाः समीपम्
	उपकृष्णम्	–	कृष्णस्य समीपम्
	यथाशक्तिम्	–	शक्तिम् अनतिक्रम्य
	उपग्रामम्	–	ग्रामस्य समीपम्
	प्रतिदिनम्	–	दिनं दिनम्

उपसर्ग

उपसर्ग ऐसे शब्दांश हैं जो संज्ञादि शब्दों और क्रियाओं से पूर्व लगकर शब्दों के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। उपसर्ग सोदाहरण :–

अनु – (पीछे, साथ–साथ, हीन, समान, ओर)

जैसे :–	अनु	+	करण	=	अनुकरण	(नकल करना)
	अनु	+	कूल	=	अनुकूल	(उपयुक्त)
	अनु	+	चर	=	अनुचर	(सेवक)

अव – (दूर, अनादर, अवलम्ब)

जैसे :–	अव	+	नति	=	अवनति	(नीचे जाना (पतन)
	अव	+	काश	=	अवकाश	(छुट्‌टी)
	अव	+	धान	=	अवधान	(गतिरोध)

आ – (स्वीकृति, दुःख, निकट)

जैसे :–	आ	+	हार	=	आहार	(भोजन)
	आ	+	चार	=	आचार	(अच्छा आचरण)
	आ	+	क्रमण	=	आक्रमण	(हमला)

उप् – (निकट, शक्ति, व्याप्ति, दोष, अन्त, दान, यत्न)

जैसे :–	उप	+	आसना	=	उपासना	(पूजा करना)
	उप	+	देश	=	उपदेश	(सीख)
	उप	+	क्रम	=	उपक्रम	(व्यवसाय)

प्र – (विशेष रूप से)

जैसे :–	प्र	+	हार	=	प्रहार	(हमला, आक्रमण करना)
	प्र	+	माण	=	प्रमाण	(साक्ष्य, सबूत)
	प्र	+	भाव	=	प्रभाव	(छाप)

प्रति – (ओर, पीछे, विरोध में, ऊपर, नीचे, समान)

जैसे :–	प्रति	+	कूल	=	प्रतिकूल	(विपरीत)
	प्रति	+	शब्द	=	प्रतिशब्द	(आवृत्त ध्वनि)

सम् – (साथ, विशेष रूप से, समान)

जैसे :–	सम्	+	हार	=	संहार	(जान से मारना)
	सम्	+	अर्पण	=	समर्पण	(सौंप देना)
	सम्	+	अक्ष	=	समक्ष	(सामने)

''अव्यय''

जिनका रूप परिवर्तन नहीं होता ऐसे शब्द अव्यय कहलाते हैं, अथवा तीनों लिङ्गों सभी विभक्तियों और सभी वचनों में जो समान रहता है, वह अव्यय है।

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्।।

कुछ अव्यय अर्थ के साथ निम्नलिखित हैं :–

अधुना	=	अब, आजकल	अथ	=	तब, पीछे
अद्य	=	आजकल	अथकिम्	=	हाँ
ह्यः	=	कल (बीता हुआ)	अलम्	=	पर्याप्त
श्वः	=	कल (आने वाला)	इह	=	यहाँ
अधः	=	नीचे	इति	=	ऐसा
पश्चात्	=	बाद में	क्व	=	कहाँ
उपरि	=	ऊपर	खलु	=	अवश्य ही
ततः	=	फिर	तत्	=	इसलिए
यतः	=	क्योंकि	तथा	=	ऐसा ही
कुतः	=	कहाँ से	तदानीम्	=	तब
सर्वतः	=	सभी ओर से	तर्हि	=	तो, तब
पुरतः	=	आगे, सामने	तावत्	=	तब तक
पुरः	=	आगे, सामने	न	=	नहीं
पुरस्तात्	=	आगे, सामने	ध्रुवम्	=	निश्चय ही
यदा	=	जब	नहि	=	नहीं
कदा	=	कब	नूनम्	=	अवश्य ही
तदा	=	तब	परम्	=	तो
कथम्	=	कैसे	परितः	=	चारों ओर
अतः	=	इसलिए	पुनः	=	फिर
अपि	=	भी	पुरा	=	पुराने समय में, पहले
कुत्र	=	कहाँ	पृथक्	=	अलग से

यत्र	=	जहाँ	दिवा	=	दिन में
अत्र	=	यहाँ	दिष्ट्या	=	भाग्य से
तत्र	=	वहाँ	प्रतिदिनम्	=	प्रतिदिन
सर्वत्र	=	सब जगह	प्रत्युत्	=	इसके विपरीत
च	=	और	प्राक्	=	पहले
वा	=	अथवा	प्रातः	=	सबेरे
एव	=	ही	वै	=	अवश्य ही
सत्वरम्	=	शीघ्र	विना	=	बिना
बहिः	=	बाहर	यत्	=	चूँकि
वृथा	=	व्यर्थ में	सद्यः	=	अभी–अभी
मा	=	मत (नहीं)	समम्	=	बराबर
उच्चैः	=	ऊँचा	सम्प्रति	=	अभी (इस समय)
नीचैः	=	नीचे	सम्यक्	=	पूर्णरूप से
धिक्	=	धिक्कार	सर्वतः	=	सभी ओर से
इतस्ततः	=	इधर–उधर	सर्वदा	=	सदा
यथा	=	जैसे	साक्षात्	=	सामने
तथा	=	वैसे	सायम्	=	संध्या के समय
प्रायः	=	प्रायः, अधिकांश	हि	=	अवश्य ही
स्वस्ति	=	कल्याण हो			

नोट :– सभी वर्ण, उपसर्ग और प्रत्यय, अव्यय की श्रेणी में आते हैं।